मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० के० एल० जौड़ा
एम.एस.सी., पी.एच.डी.

| वर्ष 8 | बुधवार 10 फरवरी 1982 | संख्या 10 |

सत्संग परम दयाल जी महाराज, मानव मन्दिर होशियारपुर

दिनांक : 31-5-1981

तू सच्चा है मुझे सच्चाई, बख्श बख्श सद् गुरु प्यारे।
तू प्रकाश है तेरी दया से, प्रगटे घट रवि शशि तारे ॥
तू दाता है दान दे मुझको, नाम रतन धन स्वामी।
मेरे मन में आके समाजा, जो तू है अन्तरयामी ॥
तू है ज्ञान ज्ञान मुझेको दे, मेट तिमिर अज्ञान मेरा।
तेरे रूप का दर्शन पाऊं, छिन प्रतिछिन रहे ध्यान तेरा ॥
तू सत् है अपनी सत्ता दे, जीवन मेरा सुधर जावे।
तू चित् है निश्चल कर चित को, निश्चित ज्ञान मुझे भावे॥
सत् चिंत् आनन्द रूप है तेरा, दे आनन्द मुझे सतगुर।
नाम रूप के तेरे सहारे, जीते जी जाऊं सतपुर ॥
राधास्वामी परम पुरुष करतारा, तू दुःखियों का सहारा है
दुःखि दरिद को मेट दे मेरे, दुःखदाई संसारा है ॥
चरण शरण की ओट गहूं मैं, आनन्द मंगल साज सजूं।
राधास्वामी राधास्वामी हित से सुमिरूं,
राधास्वामी राधास्वामी नित्त भजूं ॥

हें जगत सब अन्धा, कोई गहे न् घट की सन्धा ॥
ुख भरमे सारे, अन्तर्मुख शब्द न धारे ॥
जगत् भोग रस बन्धा, नित करे कर्म बस धन्धा ॥
मरे काल के फन्दा, अब हुआ जीव अति गन्दा ॥
कहें नित्त समझाई, कर खोज शब्द घट जाई ॥
सुने न गुरु के बैना, कस खुलें हिये के नैना ॥
ला कोई जिउअधिकारी, गुरु बचन करे आधारी ॥
बचन सम्हारे गुरु के, मन फन्द लगावे छल के ॥
ं त्यों कर जीव भुलावे काल अपने खेल खिलावे ॥
भक्ति न करने पावे, बहु भाँति उपाधि लगावे ॥
ा मित्र होय भरमावे, कभी बैरी बन धमकावे ॥
ै रोगन माहिं झुमावे, नाना विधि जाल बिछावे ॥
ब्द रस लेन न पावे, यों जीव सदा दुःख पावे ॥
रु मेहर करें जिस जन पर, सो बचे शब्द धुन सुन कर ॥
व गहे शब्द रस जाँची फिर जले न जग की आँची ॥
ब बात लगी अब काँची, गुरु भक्ति मिलो अब साँचो ॥
राधास्वामी की लीनी सरनी, सो जीव लगे भौ तरनी ॥

ये वाणियाँ आप ने सुनीं। इन वाणियों ने मेरे मन को भरमाया हुआ था। मैं देखना चाहता था कि राधास्वामी मत या सन्तों के मार्ग में शब्दयोग या गुरु भक्ति की जो महिमा है इस में वास्तविकता क्या है और इसमें भेद क्या है ? मेरा सारा जीवन इसी भ्रम में व्यतीत हो गया। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्यों फ़कीर चन्द ! तुम्हें शब्दयोग से क्या मिला ? शब्दयोग लाभकारी है या नहीं ?

मैं सारा जीवन इस मन के साथ जूझता रहा कभी इस मन ने मुझे कहीं फिराया, कहीं राम की भक्ति करवायी, कहीं दाता दयाल का प्रेम करवाया, कहीं गिराया, कहीं कुछ किया, कहीं कुछ किया, कहीं कुछ किया। और अब भी अगर मैं अपने मन के अन्तर स्वयं शब्द को नहीं पकड़ता तो मेरे मन के अन्दर तरह-तरह के विचार, कभी अच्छे, कभी बुरे पैदा होते रहते हैं। ये विचार सब के अन्दर पैदा होते हैं। यदि तुम सोचो तो तुम्हारे अन्दर भी होते हैं। जब अकेले बैठते हो तब मन कभी कुछ सोचता है, कभी कुछ सोचता है, कभी कुछ सोचता है। शब्द-

योग से मुझे वास्तविक लाभ कब हुआ ? जब मुझे यह विश्वास हो गया कि स्वप्न में, अभ्यास में या जाग्रत में जो कुछ मेरे मन के भीतर फुरता है, कल्पना होती है जितने ख्यालात होते हैं व शक्लें बनती हैं यह। वास्तव में हैं नहीं बल्कि यह Suggestions & Impressions हैं संस्कार हैं जो हमारे मस्तिष्क में पड़े हुए हैं तथा यह सारे का सारा है कुछ नहीं बल्कि माया है। तो शब्दयोग ने मुझे लाभ कब दिया ? केवल शब्दयोग ही स्वयं लाभ नहीं देगा अर्थात् जब तक किसी को यह ज्ञान नहीं होगा कि जो कुछ मेरे अन्दर फुरता है यह माया है, है नहीं। लाख मानव शब्दयोग करता रहें यदि उसको यह ज्ञान नहीं है और जो कुछ उसके मन के अन्दर फुरना फुरती है वह उसको सत्य समझता है तो वह उसी में फँस जायेगा और दुःखी होगा। उसको शब्दयोग से कोई लाभ नहीं होगा। केवल एक आनन्द मिलेगा। मगर वह मन के चक्कर से नहीं निकल सकता तथा न ही उसे शान्ति मिलेगी यही एक भेद है जिसके सहारे स्वामी जी या कबीर साहिब ने सभी धर्मों का खण्डन किया।

आज शब्द निकला था :—

तू सच्चा है मुझे सच्चाई बख्श बख्श सद्गुरु

ज्ञान मिलने की प्रसन्नता में मैं 192
आरती करने गया था तो अपने भावों को प्र
के लिए मैंने ही यह प्रार्थना बना कर दी
जी के समक्ष की थी । आज मैं अपनी
पूछता हूं, क्यों फ़कीर चन्द ! क्या तुम्हें सच्च
मैं राम को खोज में निकला था, मुझे य
मिली कि मानसिक पूजा व भक्ति असली
बल्कि सुरत से अपने अन्दर शब्द की भ
गुरु या उस मालिक की वास्तविक व से
है और गुरुमुख वह है जो मन के तबके क
अपनी ज़ात में स्वयं ठहरता है । मगर ल
गुरुमुख कहते हैं जो गुरुओं जैसा रूप बन
गुरु को धन दे देता है । वे व्यक्ति जो ऐस
वे सब गुरुमुख नहीं हैं यही सच्चाई है ।

तू प्रकाश है तेरी दया से, प्रगटे घट रवि श

गुरु के चरण तुम्हारे अन्तर में प्रकाश है
शब्द स्वरूप है । जिनके अन्दर प्रकाश

जाता है उनको गुरु के चरण मिल जाते हैं
लाभ होता है ? उनको शान्ति मिलती है और
मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं । विज्ञान ने प्रम
किया है कि प्रकाश में से इलैक्ट्रोन या प्रोटोन नि
हैं तथा उनसे फिर स्थूल मादा (Gross ma
बन जाता है । वैज्ञानिक बताते हैं कि वे गैसें
कर उनसे पानी बना लेते हैं । जब प्रकाश
इलैक्ट्रोन या प्रोटोन निकल करके स्थूल माद
लेते हैं तो जो व्यक्ति अपने अन्दर प्रकाश में
करता है जो कुछ उसकी अपनी इच्छा होगी
दिल में रख कर प्रकाश में जाये तो उसक
इच्छा पूर्ण होनी चाहिए । अतः जो व्यक्ति
का मन्त्र सिद्ध कर लेता है ओम् भूर्भुवः
सवितुर्वरेण्यम् । प्रकाश को अपने अन्दर पै
और प्रकाश में ठहरो यही गायत्री मन्त्र है
प्रकार करता है उसमें सिद्धिशक्ति आ जा
प्राचीन समय में भी यह अवस्था थी । आ
कोई नहीं करता । पण्डित तो केवल जिह्व
की रट लगाना जानते हैं और राधास्वामी
जिह्वा से पांच नाम और राधास्वामी-२ कर

हैं। जो वास्तविक अर्थ था वहाँ तो वह पहुंचे नहीं अब मैं ऐसा नहीं करता। तो मैं प्रकाश में रह कर प्रसाद दे देता था। वह करता था कि एवम् अस्तु (या ऐसा हो जायेगा) और होता भी था। यह मेरे जीवन के निज अनुभव हैं। एक बार मैं घर में बैठा हुआ था, तो मामचन्द चलने लगा तब मेरी पत्नी ने कहा कि यह जा रहा है। इतनी सेवा करता है जाती बार इसे प्रसाद तो दे दो। मैंने कहा-अच्छा। मैं बैठ गया। मैंने एक चीज़ हाथ में ली और स्वयं प्रकाश में चला गया। मैंने कहा ले मामचन्द ! जिसको देगा बेड़ा पार हो जायेगा। कहता है कि मैंने 6 स्थानों पर उस प्रसाद को आजमाया और प्रत्येक स्थान पर मुझे सफलता मिली। यह मेरे निजी अनुभव हैं।

1941—42 में लाहौर गया था। वहां व्यास का एक सत्संगी सरदार सेवासिंह था। वह मेरे पास आया उसकी पत्नी भी बैठी थी। उसकी पत्नी बहुत उदास थी। मैंने उनसे उदासी का कारण पूछा। उसने कहा कि इसके सन्तान नहीं है। यह व्यास गई थी। बाबा सावन सिंह जी को इसने कहा कि मेरे कोई सन्तान

नहीं है तो बाबा सावन सिंह जी महाराज ने डण्डे मारे कि क्या मेरे पास कोई बच्चा पड़ा है ? यह मुझे कहती है कि सन्तों के पास मत जाया करो। इन सन्तों के पास कुछ नहीं। यह सुन कर मुझे बड़ी ग्लानि हुई। मैंने कहा, मेरे पास सुबह आना। वे मेरे पास आये। मैंने आम उठाया, मस्तक से लगाया और अपने ख्याल से मैंने उस आम में प्रकाश का बच्चा बनाया और भरा तथा उसे दे कर कहा कि इसे ले जाओ। उसके हां सात महीने पश्चात् लड़का पैदा हुआ। फिर वह मेरे पास आया। मैंने कहा कोई बात नहीं, दलिया ले आओ। मैंने दलिये का प्रसाद कर दिया और कहा- ले जाओ। उस लड़के का नाम मैंने शिवदयाल सिंह अर्थात् स्वामी जी के नाम के ऊपर रखा। अब वह लड़का ज़वान है। यह मैं अपना अनुभव बता रहा हूं तथा प्रमाण दे रहा हूं कि मैं जो कुछ कह रहा हूं क्यों कह रहा हूं ? यह इस लिए कि प्रकाश का साधन मैंने परखा हुआ है। मैं पुस्तकों का ज्ञान नहीं जानता।

बाबा जगत् सिंह मेरा बहुत मान करते थे। कारखाने में मुझे आकर मिलते थे। आटे से मेरे हाथ

लथपथ होते थे तथा मैं जफ्फी डाल कर मिलता थ
एक बार वह आये उनके साथ बन्दूकों वाले
थे, वे हैरान हुए। मैंने कहा कि क्या तुम यह सम
हो कि सन्त वह होता है जिसके साथ वन्दूकों वाले
जब वह बीमार हुए तो मैंने मामचन्द से कहा म
चन्द ! मैं इन्हें मरने नहीं दूंगा । मुझे बड़ा घ
था। मैंने प्रसाद बना कर दिया और कहा कि
प्रसाद ले जा और उन्हें खिला दे। वह ले गया
जब व्यास स्टेशन पर पहुंचा तो मालूम हुआ कि
चोला छोड़ चुके थे। मुझे प्रकाश में जाकर प्रस
की शक्ति पर इतना विश्वास था। प्रकाश का
है कि इच्छा को लेकर प्रकाश पैदा करो वह
पूर्ण हो जायेगी। अब मैं यह कार्य नहीं क
यह प्रसाद देना मैंने छोड़ दिया क्योंकि यदि मैं
प्रकाश का ही साधन करता रहूं तथा प्रकाश
रहूं और इसमें फँस जाऊँ तो मैं आगे नहीं जा
मगर जब मैं इस अवस्था में था तो मैंने पर
इसीलिए मैं कहता हूं कि जो कुछ लिखा है य
कुल सोलह आने ठीक है। मगर आज मेरी
यह सन्तमत सच्चा न निकलता तो मैं आ

से कहता हूं कि मैं परवाह न करता और सन्तों के विरुद्ध ज़हर उगल जाता। इस स सनातनियों की वही बात है जिसका स वालों को स्वयं पता नहीं :—

तू प्रकाश है तेरी दया से प्रगटे, घट रवि शशि
तू दाता है दान दे मुझको, नाम रतन धन का

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं व चन्द ! तुम्हें नाम मिल गया ? जो नाम है वह मैं बता सकता हूं। नाम क्या है ? तू क्या है ? मैंने क्या समझा कि मन को छोड़ कर मैं प्रकाश और पकड़ता हूं। बहाँ उस वस्तु की तलाश जो मेरे अन्दर प्रकाश को देखती और सुनती है। वह क्या है ? जब कभी वहाँ वहाँ न तू, न मैं चिराग़। गुल पगड़ी ग़ा क्या हूं ? मैं वह हूं जो अपने अन्तर मे देखता और शब्द को सुनता है। फिर हूं अगर वह बन कर मैं कुछ बन गय मैं कुछ कर सकता हूं ? नहीं। अगर व

कुछ बन सकता तो बना लेता। अतः मैंने क्या समझा कि मैं कौन हूं ? मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। वह एक तत्त्व है। क्या है क्या नहीं। उसमें गति होती है, बुलबुले बन जाते हैं और उसमें 'मैं' आ जाती है। जब उस में से 'मैं' समाप्त हो गई तो न 'मैं' न 'तू'। इससे क्या हो गया ? मेरा अहंकार टूट गया। मेरा सब कुछ समाप्त हो गया। मुझे अपने जीवन में यह नाम मिला। मैं चाहता हूं कि यदि मैं ग़लत हूं तो अन्य महात्मा मेरा खण्डन कर जायें इससे मुझे प्रसन्नता होगी।

मेरे मन में आकर समाजा, जो तू है अन्तरयामी।

अब मेरे मन में क्या है ? मेरा तो अब मन ही नहीं रहा। अब क्या कहूं ? जब तक मन था तो उसमें यह विश्वास था कि मेरा गुरु है, मेरा भाई है, मेरा फलाँ है। जब मन ही नहीं रहा तो किसको मानूं ? यह मेरी ऊँची अवस्था है। प्रेम में खिंचाव है, यकसूई है, खुशी व आनन्द है मगर शान्ति नहीं है।

तू है ज्ञान ज्ञान मुझको दे, मेट तिमिर अज्ञान मेरा।

मेरा अज्ञान मिट गया और मेरे जीवन की सम्पूर्ण खोज समाप्त हो गई। तुम लोग तो गुरु के पास भिखारी बन कर जाते हो लेकिन मैं दाता बन कर जाता था। तुम लोग तो मांगते हो मैं देने जाता था। धन ही नहीं बल्कि तन, मन, धन, सुरत और प्राण इत्यादि। क्योंकि मैं देखना चाहता था कि इन राधास्वामियों का परमात्मा कौन सा है और इस का ज्ञान मुझे मन व माया के रूप की समझ आने से मिला। मेरी आँख खुल गई, भ्रम चले गये तथा मैं सन्तमत को समझ गया।

तेरे रूप का दर्शन पाऊं, छिन प्रति छिन रहे ध्यान तेरा।

वह मेरा कौन था? वह मेरा ही रूप था। अब मैं जिसके दर्शन करता हूं वह मेरा ही निजरूप है। गुरु और मैं भिन्न नहीं थे। भ्रम था। मैं बाहर भटकता फिरता था।

तू सन्त है अपनी सत्ता दे, जीवन मेरा सुधर जावे।

मेरा जीवन सुधर गया और मुझे सच्चाई मिल गई। चित्त स्थिर क्यों नहीं होता? तुम अभ्यास

ठते हो तरह-तरह के विचार उठते हैं। जिस समय स्थिर हो जाता है सब कुछ ाता है। इस चित्त को स्थिर करना प्रत्येक के वश में नहीं है। चित्त को केवल वही कर सकता है जिसका मानसिक और शारीरिक र्य ठीक है। जो विषयी व्यक्ति हैं उनका मन नहीं रह सकता। मेरा नहीं रहा। मैंने 905 में नाम लिया। सन् 1916 तक केवल रोने- के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। क्योंकि छोटी आयु में शादी होने के कारण मैं विषयी 12 वर्ष बसरे बग़दाद रहा वहाँ मेरा मन र हो गया क्योंकि वहाँ कोई उलझन नहीं थी। ा अच्छा मिलता था, पैसे मिल जाते थे, चिन्ता फ़िक्र कोई नहीं थी। या भक्ति थी या सरकार की करी थी। मेरा उस समय का चित्त वहां लगा ा है। अत: जब तक किसी व्यक्ति का जीवन विषय- ार का है और वह चाहे कि मेरा मन स्थिर जाये, वह लाख प्रयत्न करे मन स्थिर नहीं ा है। 'कामी कबहुं न गुरु भजे' यह बात

सत्य है। इस लिए मैंने कहा कि मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखो, बस।

सत् चित् आनन्द रूप है तेरा, दे आनन्द मुझे सत गुर।
नाम रूप के तेरे सहारे, जीते जी जाऊँ सतपुर।

अब मैं अपनी आत्मा को शपथ देकर पूछता हूं कि तू कुष्ठी हो कर मरेगा अगर दुनिया को धोखा देगा। तो क्या फ़कीरचन्द! सत्तपुर जाता ? मैं सत्यप्रिय मानव हूं। मेरी समझ में क्या आया ? जब मैं मन को छोड़ जाता हूं तो आगे केवल प्रकाश और शब्द है। वह जो प्रकाश और शब्द का मण्डल है मैं उसे सत्तपुर समझता हूं। यदि सन्तों का सत्तपुर और है तो मुझे नहीं पता। जीवन में शायद चार बार एक महान् प्रकाश और शब्द देखा जो अनन्त था। मगर जहाँ प्रकाश और शब्द सदैव रहता है मैं उस स्थान को सत्तपुर कहता हूं।

नाम रूप का सहारा क्या है ? वर्णात्मक नाम मिला था, रूप का ध्यान मिला था, करते-२ मैं वहां चला गया।

राधास्वामी परम पुरुष करतारा, तू दुःखियों का सहारा है।

क्या कोई भी बाहरी गुरु सब दुःखियों का सहारा हो सकता है ? नहीं। वह ज़ात जहाँ से शब्द और प्रकाश निकलता है, वह दुःखियों का सहारा है। कोई भी व्यक्ति जो उसका आश्रय लेता है, किसी रूप के द्वारा उस पुरुष या मालिक को याद करता है उसको सहारा मिल जाता है, उसके काम हो जाते हैं, संकट दूर हो जाते हैं। लोग संकट के समय में मुझे याद करते हैं। परसों भी एक व्यक्ति ने मुझे बताया था कि बम्बई में एक औरत का बच्चा मर गया। वह बड़ी भक्तिन थी। वह मेरी फोटो वहाँ रख कर दरवाजा लगाकर चली गई और कहा कि आप ही बाबा ठीक करेगा। 6 घंटे बाद वापिस आई, लड़का जीवित था। अब मैं हैरान हूं। इन अनुभवों से क्या परिणाम निकला ? लोग मेरे रूप में उस मालिक को मानते हैं या मुझे पूर्ण मानते हैं और ध्यान करते हैं। लेकिन मैं तो जाता नहीं। उनका अपना ही जो विश्वास है वह उनके कार्य करता है। अतः विश्वास किसका है ?

उस मालिक का। उसको किसी रूप में पूजो, राम के रूप में पूजो या कृष्ण के रूप में पूजो या देवी के रूप में पूजो जो मांगो वह देता है। यह सच्चाई है। तुम्हारी दृष्टि से वह देता है। हालाँकि यह तुम्हारी अपनी ही श्रद्धा और विश्वास है। वह तुमको देता है। लोगों को मिलता है। मैं हैरान होता हूं।

दुःख दरिद्र को मेट दे मेरे, दुःखदाई संसारा है।

मेरे दुःख, दरिद्र मिट गये। यह मेरा शब्द था जो मैंने 1920 ई० में दाता के दरबार में गाया था। आज उस शब्द के ऊपर सत्संग दे दिया। आज दूसरा शब्द निकला था:—

गुरु कहें जगत् सब अन्धा, कोई गहे न घट की संधा।

क्या यह असत्य है? अन्धा कैसे? अज्ञानी है अर्थात् इसको समझ नहीं है। अपने आप को नहीं देखा, बाहर दौड़ता फिरता है अतः अन्धा है।

बाहर सुख भरमे सहारे, अन्तर मुख शब्द का धारे।

जो बहिर्मुखी होकर मन से राम या गुरु को पूजता है वह मनमत है, गुरुमत नहीं। गुरुमत

वह है जो मन के तबके को छोड़ कर अपनी ही ज़ात से बंधता है। जब तक मानव अन्तर्मुखी होकर सार शब्द को नहीं पकड़ता है तब तक उसे वास्तविक लाभ नहीं होता। मगर इसके लिए प्रथम आवश्यक है कि मानव बनो, मन पवित्र हो। मन पवित्र तब होता है जब इच्छाएँ ठीक हों। दूसरे याद रखना जिस व्यक्ति की आय (Earning) पवित्र नहीं है उसका मन भी पवित्र नहीं हैं। अत: अपने कर्म व अपने ख्याल को ठीक रखना सीखो। तुमने सोचना क्या है तथा कैसे विचार रखने है ? तभी तुम आगे सफलता प्राप्त कर सकते हो। कर्म की जड़ वासना में है, नीयत में है, जैसी हमारी नीयत है वैसी हमारी मुराद है।

परम सन्त पूर्ण धनी हजूर मानव दयाल ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज का सत्संग भीलवाड़ा

22-12-81

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः।

गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है तथा गुरु ही महेश्वर है गुरु ही साक्षात् परब्रह्म है, ऐसे गुरु को नमस्कार।

ओंकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः॥

उस परम तत्त्व ओंकार को नमस्कार है, जिसके साथ बिन्दु का संयोग है। विन्दु नाद है और ओंकार तत्त्व, जिसका ध्यान करके योगी अनन्त ज्ञान को

प्राप्त करते हैं। उस ओकार को नमस्कार करता हूं, जो मोक्ष को देना वाला है तथा सांसारिक सुख को भी देने वाला है।

ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

वो परम तत्त्व, वो परम सत्ता जो विश्व का आधार है जिसे परम धाम धुर पद धाम कहा जाता वो पूर्ण है और मनुष्य क्योंकि उस पूर्ण से निकला है इसलिए वो भी पूर्ण है। जब उस परम तत्व पूर्ण के इष्ट मनुष्य तत्त्व के मानव तत्त्व को जान लिया जाता है अर्थात् उसका ज्ञान हो जाता है तो उस समय व्यक्ति उस परम पद को प्राप्त हो जाता है। मैंने जो यह अन्तिम पद कहा है यह उपनिषदों का है। उपनिषद् क्या हैं? सन्तमत और सन्त सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं। अन्तर केवल इतना है कि जो लोग उपनिषदों को केवल पढ़ने की दृष्टि से पढ़ते हैं, भगवद्गीता का अध्ययन

केवल अध्ययन करने की दृष्टि से करते हैं या यह समझ कर कि भगवद्गीता के एक सौ बार पाठ करने से उनको मोक्ष मिल जायेगा वो भूल पर हैं। और जो लोग विना भगवद्गीता पढ़े थोड़ा सा अनुभव करने के पश्चात्, थोड़ी धण्टे की आवाज सुनने के पश्चात्, शब्द का अभ्यास करने के पश्चात्, और शून्य महाशून्य का अनुभव करने के पश्चात्, हंसों को देखने के पश्चात् या सत्तलोक को भी अनुभव करने के पश्चात् यही समझ लेते हैं कि उपनिषदों में कुछ नहीं है, भगवद्गीता में कुछ नहीं है वो भी भूल पर हैं।

परम दयाल जो महाराज ने अपने जीवन काल में कई सन्तों की ही शिक्षा नहीं ली, उन्होंने वेदों को नहीं पढ़ा, उन्होंने उपनिषदों को नहीं पढ़ा, उन्होंने केवल अनुभव के आधार पर जो कुछ कहा वो उनके शब्द हैं कि सत्त सनातन धर्म तथा सन्तमत में कोई अन्तर नहीं है। आज का विषय अध्यात्म का विषय है। यह विषय मैं जान-बूझ कर आपके सामने रख रहा हूं। क्योंकि मैंने जैसा कहा इसमें

कोई अन्तर नहीं तथा मैं यह बात केवल पढ़ाई-लिखाई के आधार पर नहीं कह रहा। पिता जी इस उपनिषद् के मन्त्र को बार-बार कहा करते थे :—

पूर्णमदः पूर्णमिदं पुर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेववाशिष्यते।।

देववाणी कैसी सुहावनी भाषा है। आपके शब्द सुनने मात्र से आपको इसमें अनुमोदन होता है। क्यों होता है ? ऋषियों ने पूर्वकाल में यही अनुभव किया जिस अनुभव को कबीर साहिब ने या राधा-स्वामी दयाल ने तथा उनके पश्चात् सालिगराम जी ने तथा दाता दयाल जी ने जिन्होंने उपनिषदों पर, रामायण पर तथा कृष्ण तत्त्व पर लिखा है उन्होंने उनकी व्याख्या की। यह सन्त अवतार जो हमारे समय में हुए हैं यह इस लिए हुए हैं कि वो प्राचीनतम निधि उपनिषदों में, वेदों में ब्राह्मण ग्रन्थों में जहाँ पर नाद ब्रह्म, परब्रह्म, अंह ब्रह्म, अक्षर ब्रह्म की व्याख्या है वो लुप्त हो गई। क्यों लुप्त हो गई ? क्योंकि जो अभ्यास करने वाले ऋषि मुनि थे। उन्होंने उपनिषदों में जो कहा। उपनिषद् शब्द क्या है ?

उप का अर्थ है निकट तथा निषद् का अर्थ है बैठना। तो वो ऋषि जो अभ्यास करते थे तथा उन्होंने चौथा पद कहा, यह ग़लत बात है कि यह कहते हैं कि उपनिषदों में चौथा पद नहीं बल्कि चारों पद हैं।

आपके चार आश्रम हैं। कौन से चार? ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। ब्रह्मचर्य का सम्बन्ध शरीर से है। जो व्यक्ति अपने शरीर को नहीं बनाता अर्थात् शरीर का ध्यान नहीं रखता, वो आध्यत्मिक के ऊपर नहीं पहुंच सकता। शरीर की पुष्टि के लिए ब्रह्मचर्य आवश्यक है। ब्रह्मचर्य रखो, ब्रह्मचर्य करो पिता जी ऐसा कहते-२ क्यों गये? उन्होंने यह अनुभव किया था कि जब तक आपका शरीर पुष्ट नहीं है, शरीर स्वस्थ नहीं है, तो आप आगे नहीं बढ़ सकते।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

यह महाकवि कालिदास जो सन्त थे उन्होंने कहा। आप यह नहीं कह सकते कि सन्त केवल अभी ही हुए, पहले हुए ही नहीं। यह

कैसी बात है ? क्या वेदव्यास सन्त नहीं थे ? महर्षि वेदव्यास जी ने चौथा पद कहा है लेकिन लोगों ने पढ़ा नहीं है। न पढ़ने के कारण एकदम कैसे कह दिया कि वेदों में कुछ नहीं। ठीक है संस्कृत में लिखा है। क्योंकि इस युग में संस्कृत को समझने वाले कम हैं। इस लिए सन्तों का अवतार हुआ। तुलसीदास जी का नाम आपने सुना होगा। तुलसीदास जी संस्कृत के बड़े विद्वान् थे। यह राधास्वामी वाले तो यह मानते हैं कि तुलसीदास जी सन्त हैं, कबीर सन्त हैं। कौन कह सकता है कि तुलसीदास जी सन्त नहीं हैं ? जिन्होंने राम शब्द के नाम को बताया कि राम है क्या ?

सीया राम मय सब जग जानी,
करहुं प्रणाम जोरि जुग पाणी।

सन्त का किसी विशेष धर्म के साथ सम्बन्ध नहीं होता। वो सभी धर्मों का आधार बता गये हैं कि ईश्वर एक है, तत्त्व एक है। उनके अनेक नाम लेकर हमने मानव जाति को खण्ड-खण्ड कर दिया है। समझ मिली है तो तुलसीदास जी महासन्त थे। उन्होंने जब कहा है :—

नाना विधि राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा।

यह समझने की बात है। झगड़े की बात कहाँ-कहाँ है ? जो नहीं जानता है, जिसको अनुभव नहीं है, जिसने स्वामी तत्त्व का अनुभव नहीं किया, जिसने पृथ्वी तत्त्व का अनुभव नहीं किया, जिसने फ़कीर तत्त्व को नहीं समझा, वो झगड़ा करेगा। मुझे बताओ कहाँ झगड़ा है ? यह सब अज्ञान है।

तो मैं कह रहा था कि तुलसीदास जी को सन्त अवतार मानना चाहिए जिन्होंने प्रेम की गंगा बहा दी। तुलसीदास जी जब जीवित थे, लिखा है :—

वेदमत कोटि कोटि कोटि के पुराण जपो,
सन्तवा महासन्तन का भेद को, बताओ तो।

उपनिषद् तथा वेद इत्यादि सब को छान-२ कर उन्होंने रामचरितमानस लिखा है। परम दयाल पिता जी रामायण का पाठ किया करते थे। लोग पाठ करते हैं लेकिन श्रद्धा से नहीं करते। वो जब रामायण का पाठ किया करते थे तो इतनी श्रद्धा से किया करते थे कि उन्होंने राम का साक्षात्कार

किया। क्या कोई ऐसा सन्त है जिसने राम का साक्षात्कार किया हो ? उन्होंने कई बार किया। वो ऐसे सच्चे सन्त के अवतार थे। एक बार उन्होंने रामायण का पाठ रखा। उनके जीवन की कथा सुनाता हूं। ऐसे स्टेशन पर थे जहाँ रामायण का पाठ करते थे तो आर्यसमाजी भाई.....हम किसी से घृणा नहीं करते.....वो उन पर हंसी उडाते थे। जब पिता जी रामायण का पाठ करते, तो जो बीस, पच्चोस लोग घर पर आते उनके लिए थोडा सा प्रसाद हलवा बनाकर, जब रामायण की पूर्णाहुति होती तो सब को थोड़ा-२ बांटते थे। एक बार उन आर्यसमाजी भाइयों ने कहा कि यह राम क्या है ? वो रामायण को, गीता को नहीं मानते थे। कुछ लोग ग़लती पर थे। उन्होंने क्या किया कि एक वार जब पाठ हो रहा था तो वहाँ कोई मिल थी, वहां के दो तीन सौ मज़दूर लाये तो उनको बैठा दिया। आप देखेंगे कि इनका थोड़ा सा प्रसाद सबको कैसे प्राप्त हो सकता है ? यह सच्ची घटना है। तो परम सन्त परम दयाल पण्डित फ़कीरचन्द जी महाराज को उनके साथ काम करने वाले असिस्टेंट थे, वो

कहने लगे कि इतने व्यक्तियों को प्रसाद कहाँ से देंगे ? तो महाराज ने कहा कि ठहर जाओ। प्रसाद को कपड़े से ढांप दो। उसको ढक कर थोड़ा-2 सा प्रसाद सब को देते जाओ। प्रत्येक व्यक्ति को वो प्रसाद देते गये। दो तीन सौ व्यक्तियों को उसी मात्रा में में बांटा गया, जब कपड़ा हटाया गया तो कुछ प्रसाद अभी शेष था। है कोई रामायण का ऐसा पाठक, जिसने ऐसा अनुभव किया हो ?

तो यह एक भ्रान्ति है । मैंने सुना, लोग कहते हैं कि जब कभी यहाँ सत्संग होता है तो कुछ लोग आना ही नहीं चाहते। ठीक है यह उनकी अपनी इच्छा है। वो स्वामी तत्त्व हैं, सभी स्वामी तत्त्व हैं। क्योंकि यह जो तत्त्व है यह किसी की बपौती में नहीं है । राधास्वामी की बपौती में नहीं है। राधास्वामी है क्या ? राधास्वामी नाम है । राधा नाम है आत्मा का और स्वामी नाम है मालिक का। राधा नाम है प्रकाश का तथा स्वामी इष्ट, नाद तथा शब्द का नाम है। इसमें बात क्या है ? अन्तर केवल इतना है कि राधास्वामी तत्त्व को समझने के लिए और उसी ज्ञान को प्राप्त करने के लिए ऋषि-

मुनियों ने वेदों में, उपनिषदों में तथा भगवद्गीता में कूट-कूट कर, छान-छान कर उनका रस भरा हुआ है। इसी रस का उन्होंने अनुभव किया।

मैं कह रहा था कि जब तुलसीदास जी रामायण लिखने लगे वो संस्कृत के प्रकांड विद्वान् थे तो उन्होंने रामायण को संस्कृत में लिखना शुरू किया। प्रात: काल रामायण लिखते, रात को वो श्लोक लुप्त हो जाते थे। 400 वर्ष पहले की घटना है। वो प्रात: श्लोक लिखते लेकिन रात को वो मिट जाते। फिर उनको शंकर जी के रूप में भगवान् के दर्शन हुए। शंकर भगवान् ने कहा कि तुलसीदास जी! संस्कृत में मत लिखो बल्कि अपनी निजी भाषा हिन्दी में लिखो। तब उन्होंने हिन्दी में रामायण लिखी तथा वही रामायण आज प्रत्येक घर में है। लेकिन उसको समझने की बात है, केवल पाठ करने या राम-राम करने से कुछ नहीं। आप हज़ार बार रामायण पढ़ जाओ लेकिन जब तक उस पर अमल नहीं, उस का कोई लाभ नहीं। उनके एक ही पद पर अमल कर लो :—

बन्दउं सन्त असज्जन चरना दुःखप्रदउ भय बीच कछु वरना,
बिछुड़त एक प्राण हरि लेहीं मिलत एक दुःख दारुण देहीं।

तुलसीदास जी कहते हैं कि मैं सन्त तथा दुर्जन दोनों को नमस्कार करता हूं। इनमें केवल थोड़ा सा भेद है क्योंकि दोनों ही दुःखदाई हैं। भेद केवल इतना है :—

बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं ।

जब सन्त आप से विदा होता है तब आपके प्राण हरे जाते हैं। इस लिए मैं समझता हूं कि जब पिता जी ने महासमाधि ली तो आपको दुःख हुआ होगा, आप रोये होंगे, क्योंकि उनके विछुड़ने से दुःख होता है। रोना चाहिए नहीं, क्योंकि परम दयाल जी महाराज ने तीन वर्ष पहले कह दिया था कि मैं तो जा रहा हूं। 95 वर्ष के हो गये थे, जाना तो था। यह तो हम अपनी इच्छाओं के लिए चाहते थे कि अधिक से अधिक समय हम उनसे लाभ उठाते रहें। इस लिए हम यह जानते थे कि यह विछुड़ने थे। सन्त जब विछुडते हैं तो उस समय ऐसा लगता है कि हमारे प्राण चले गये।

मिलत एक दुःख दारुण देहीं ।

दुष्ट व्यक्ति जब कभी मिलेगा तो मिलते ही आपको दुःख होगा और फिर कहा कि :—

सीय राममय सब जग जानी,करउं प्रणाम जोरि जुग पानी ।

सीय का अर्थ है राधा तथा राम का अर्थ है स्वामी । सीया का अर्थ है प्रकाश । प्रकाश क्या है ? प्रकाश केवल विश्व की शक्ति है, विश्व जो चल रहा हैं, वो शक्ति उस प्रकाश की, स्वामी की तथा उस मालिक की एक बूंद की छाया है इतना बड़ा ब्रह्माण्ड है । आप एक पृथ्वी पर बैठ रहे हैं। आप समझते हैं कि मैं हूं, मैं एक बड़ा व्यक्ति हो गया । यह 'मैं' है क्या ? इस पृथ्वी के ऊपर आप एक व्यक्ति हैं । यह पृथ्वी क्या है ? यह जो पृथ्वी है, यह विश्व-मण्डल का एक छोटा सा अंश है । विश्वमण्डल में अनेक पृथ्वी और नक्षत्र हैं। यह एक सूर्य है । हमारी एक आकाश गंगा में कम से कम 250 करोड़ सूर्य हैं और एक-2 सूर्य के साथ कई पृथ्वियां और नक्षत्र लगे हुए हैं । यह एक आकाश गंगा है । ऐसी अनेक

आकाश गंगा हैं, यह वेदों में लिखा हुआ है। यही बात तुलसीदास जी ने तथा स्वामी जी महाराज ने कही है। अन्तर कहाँ है ? इतना विश्व है और वो एक बूंद मात्र है। भगवद्गीता पढ़ कर देखें। उसमें लिखा है कि अनेक ब्रह्माण्ड, अनेक सूर्य मेरे अंश मात्र हैं। इसमें कोई अन्तर नहीं। फिर झगड़ा किस बात का। बात यह है कि उन्होंने जो कहा वो संस्कृत में है। वो ऐसी व्याख्याएं हैं कि जिनको संस्कृत का पढ़ा-लिखा हुआ तो समझे लेकिन वो भी तब समझे, जब वो इस पर चले। ब्राह्मणों ने तप करके, पोथे लिखा दिये, अब भी कई पोथे पड़े हुए हैं। नागपुर, कपड़ों में बँधे हुए हैं, लेकिन उनका कोई लाभ नहीं। उन्होंने अभ्यास नहीं किया। इस लिए वर्तमान युग में कबीर साहिब से तथा तुलसीदास जी से लेकर के अब तक मालिक ने जो धारा चलाई है :—

रामायण शत कोटि अपारा।

प्रत्येक युग में मानव रूप में वो साक्षात्कार उस

ब्रह्म तत्त्व का होता है, लेकिन उसको पहचानने की आवश्यकता है। जब उसे पहचान लें या उसे जान लें तो आप स्वयं वैसे हो जायेंगे । गुरु वो नहीं जो किसी को अपने साथ बांध ले, गुरु वो है जो ऐसा ज्ञान दे कि अपने शिष्य को अपने जैसा बना ले। पारस किसे कहते हैं ? पारस तो लोहे को सोना बनाता है किन्तु गुरु शिष्यों को अपने जैसा बना देता है अपने से ऊंचा बना देता है । गुरु लोग केवल अपने शिष्य बनाते जाते हैं कि मेरे ऐसे-2 बड़े शिष्य हैं। न तो वो स्वयं तरेंगे तथा न ही उनके शिष्य तरेंगे। तो इस लिए इस युग में सभी लोग संस्कृत पढ़े हुए नहीं हैं जो दाता दयाल परम दयाल जी के गुरु थे, उन्होंने इस को मानवता का नाम दिया है। महर्षि शिव व्रत लाल जी वर्मन दाता दयाल ने सब वेद, पुराण, उपनिषद्, पढ़े तथा उन पर लिखा दाता दयाल जैसा राधास्वामी मत को समझने वाला, उस पर चलने वाला कौन है ? दाता दयाल ने वेदों, उपनिषदों सब पर लिखा। इसमें कोई अन्तर नहीं है क्योंकि इस युग में लोगों को संस्कृत का ज्ञान नहीं है तथा जिनको ज्ञान है, वो इसका अभ्यास नहीं करते हैं। इस लिए सन्तों ने

सरल भाषा में अपने अभ्यास को, अपने अनुभव को लोगों की भलाई के लिए गाया है और राधास्वामी दयाल की तो वाणियां हैं, दाता दयाल ने तो कविताएँ लिख डालीं। अभी जो बात मैंने आपको उपनिषद् की कही कि मानव पूर्ण इस लिए है कि वो पूर्ण से निकला है। दाता दयाल कहते हैं :—

अब आदमो कुछ और हमारी नज़र में है,
जब से सुना है यार लिबास बशर में है।

अब हमारी दृष्टि में मनुष्य क्या है ? जब हमने मनुष्य में देखा कि वो मालिक जहाँ से सारा विश्व, ब्रह्माण्ड निकला है वो मनुष्य के अन्तर में है। जब मुझे यह समझ आई कि मनुष्य, मनुष्य नहीं कुछ और वस्तु है। मैं जब तक अनुभव नहीं है तब तक नहीं कहता। जो अनुभव के बिना बोलता है उसका प्रभाव नहीं होता। सनातन धर्म तथा सन्तमत में तनिक मात्र भी अन्तर नहीं। सन्तमत में उन्होंने सरल भाषा प्रयोग की है। जब मेरे साथ पिता जी की बात होती थी तो मैं बहुत ग़लत बात करता था। परम

सन्त जैसे गुरु गुरु नहीं हैं, यह मैं मानता हूं। कोई नहीं कह सकता कि ऐसे गुरु हैं जिन्होंने सच्ची बात बता दी। लेकिन मेरे साथ जब भी बात होती थी मैं उनको क्या कहता। अब यह आपने बहुत सुना तथा सत्य है कि जहां भी पिता जी को किसी ने याद किया उनका रूप वहां प्रकट हो गया। इसमें तनिक मात्र भी संन्देह नहीं। कहीं पर कोई डूब रहा है तो वो डूबते हुए को बचा रहे हैं, कहीं पर कोई छात्र परीक्षा दे रहा है तथा वो कहता है कि पिता जी मुझे इस परीक्षापत्र में प्रश्न का उत्तर नहीं आता। परीक्षा दे रहा था कैमिस्ट्री की, उसने याद किया, वो कहता है कि परम दयाल जी स्वयं प्रकट हुए तथा बैंच के नीचे बैठ कर के उन्होंने उसके परीक्षापत्र के सारे प्रश्नों के उतर दे दिये। अब यह काम क्या कोई सन्त करता है ? लेकिन वो क्यों होता था ? वो कहते थे कि यह तुम्हारा विश्वास है। ठीक ही कहते थे लेकिन मैंने उनसे एक दिन कहा कि महाराज यह केवल विश्वास ही होता तो व्यक्ति नर्गिस (एक्ट्रेस) को याद करते हैं तो वो सामने क्यों नहीं आ जाती। आप का रूप क्यों प्रकट होता है ? इस पर दाता

दयाल ने फ़कीरचन्द जी महाराज के बारे में कहा था :—

तेरा सगुण रूप है, सन्तमते का सार ।

जितने राधास्वामी मत वाले हैं उनको समझना चाहिए कि :—

तेरा सगुण रूप है, सन्तमते का सार ।

जो उनका सगुण रूप था उसमें सन्तमत क्या है ? उसका रहस्य भरा हुआ था इस लिए उनका रूप प्रत्येक स्थान पर प्रकट होता था । अब भी होता है । क्योंकि उन्होंने अपने शरीर को, अपने मन को शुद्ध कर-कर के और सुमिरन और ध्यान से अपनी आत्मा को शुद्ध कर-कर के उस परम तत्त्व का साक्षात्कार कर लिया था, जिस पर पहुंचने के लिए योगी संन्यासी ब्रह्मचारी निरन्तर अभ्यास करते रहते हैं । इसमें कोई सन्देह नहीं । उन्होंने कहा कि मैं जो कह रहा हूं, मेरे जीते जी जो अन्य सन्त हैं, वो आ कर कहें कि क्या मैं झूठ बोल रहा हूं ? यदि वो सत्य है तो मेरे सामने

आ जायें। इस दृष्टि से परम सन्त परम दयाल फ़कीरचन्द जी महाराज सत्य के अवतार हैं। कई बार कहते थे कि न मैं गुरु हूं तथा न ही कुछ हूं। फिर वो कहते थे कि अन्तर से प्रेरणा होती है कि मैं सत्य का अवतार हूं। मैं परमधाम से इस लिए आ रहा हूं कि लोगों को सन्तमत के नाम पर, राधास्वामी के नाम पर, गुरुमत के नाम पर गुमराह किया जा रहा है। यहाँ ही नहीं, विश्व भर में क्या-२ अन्याय, अत्याचार गुरु के नाम पर हो रहे हैं। मैं अभी अमेरिका से आया हूं, वहाँ सभी गुरु बने बैठे हैं। भारतीय गुरु हैं, अमेरिकन गुरु हैं। वो अपने आपको गुरु कहते हैं और सब को धोखे में रखा जा रहा है। सत्संग क्यों होता है ? सत्संग में गुरु आपको बार-बार ज्ञान देता है। आपका शरीर, आपका मन और आपकी आत्मा,जब तक ये शुद्ध नहीं हो जाते तब तक वो जो उस परम तत्त्व का रूप है, आप में आ नहीं सकता। तो पिता जी का सगुण रूप सन्तमते का सार कैसे था ? कि उन्होंने शुद्ध कर लिया था, शरीर को शुद्ध कर लिया था मन को शुद्ध कर लिया था,

आत्मा को शुद्ध कर लिया था। इस लिए उनका जो सगुण रूप था, शरीर, मन और आत्मा में गुण हैं, गुणों से परे जो तत्व है, उसका नक्शा, उसकी, परछाई, चरित्र और रूप सारे पिता जी के अन्तर हैं। अन्तिम दिन जब मैं उनके पास था मैंने स्वयं देखा जैसे कि अर्जुन को भगवान् ने विराट् रूप दिखाया, इसी प्रकार का अनुभव मुझे हुआ।

तो आप शरीर को शुद्ध करने के लिए क्या करते हैं? साबुन से बार-2 शरीर को धोते हैं। मन को पवित्र करने के लिए हमें बार-बार सत्य पर चलना तथा प्रेममय रहना, शरीर, मन और आत्मा .....शरीर को शुद्ध करने तथा तपाने के लिए काम करना चाहिए। सन्तमत यह नहीं कहता कि आज आपको हमने नाम दिया तो संसार को छोड़ कर चले जाओ तथा न ही यह भगवद्गीता कहती है।

कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग।

कर्म योग से शरीर शुद्ध होता है। कर्मयोग क्या है? आप एक कर्मयोग को ही ले लो। योग का अर्थ है कि जब

हम कर्म करते हैं तो बात क्या है ? बन्धन में क्यों हैं ? जीव दुःखी क्यों हैं ? जब कर्म करते हैं तो कर्म तो शरीर से हो रहा है। तथा सुरत परम तत्त्व शरीर में आई हुई है तो वो शरीर को ही साधन मान लेते हैं। जगत् भौतिक है तो यह अंश मात्र है। इसी को ही जब वो सब कुछ मान लेते हैं और कर्म करते हुए उसमें उनकी संगति हो जाती है तब वो कर्म बांधता है। एक कर्म बांधता है। वही कर्म जो शरीर के द्वारा किया हुआ है, छुड़ाता भी है। क्योंकि यदि आप मन के रूप को समझ जायें तो मन के रूप को समझने के बाद आप उसी कर्म को जिसे पहले कर रहे थे, मोक्ष का साधन बना सकते हैं। जब आप कोई कर्म निजी स्वार्थ के लिए करते हैं तो वो कर्म बांधता है। यदि वही कर्म आप दूसरों के लिए कर रहे हैं या दूसरों की भलाई के लिए कर रहें हैं वही कर्म आपको मोक्ष की ओर ले जायेगा। इस लिए योग की साधना में यह आरम्भ में कहा गया है। पिता जी गृहस्थी थे उन्होंने संन्यास नहीं लिया हुआ था। गृहस्थ का काम किया, बाल बच्चों का पालन-पोषण

किया, स्टेशन मास्टर की duty अदा की तथा स्टेशन मास्टर की duty अदा करते हुए जब उनका लगाव था, वो कहते थे कि मुझे उनके सीन आते हैं। duty वो करते अर्थात् मालिक स्वयं उनकी duty दे जाता था। यह उनका कर्म योग था। तो जब कर्म में आसक्ति नहीं होती जैसे कि कमल का फूल कीचड़ में होता है लेकिन कीचड़ से ऊपर उठा हुआ होता है। आप देखो संखिया है, कोई संखिया ले ले तथा थोडा सा खा ले तो क्या होगा ? मर जायेगा। तथा वही संखिया जब विशेष औषधि से मिला कर गोली के रूप में आ जायेगा तो वह प्राणदाता हो जायेगा। बात एक ही है। वही संखिया जो विष होता है, वही मनुष्य को बचाता है। एक व्यक्ति कर्म करता है, वो दुःख का कारण है, दूसरा कर्म करता है वो सुख का कारण है। कर्म सब करते हैं लेकिन जो ज्ञानी है वो कर्म करता हुआ भी नहीं करता। क्योंकि वो उसमें अपना स्वार्थ नहीं रखता। शरीर अपना काम करेगा, मन अपना काम करेगा और बुद्धि अपना काम करेगी। यह तो तीन गुणों से बना हुआ है। इन तीन गुणों से परे चौथा पद कहा गया

है। तो यह तीन गुण तो काम करेंगे। किन्तु इन तीन गुणों में काम करते हुए, खाते हुए, पीते हुए, जागते हुए, सोते हुए निरन्तर यदि सुरत ऊपर लगी हुई है तो आपके शरीर का काम आपको बाँधेगा नहीं, आपके मन का काम आपको नहीं बांधेगा, आपकी वुद्धि का काम आपको नहीं बांधेगा। अब न प्रारम्भ में गुप्ता जी चीफ़ इञ्जीनीयर थे। पिता जी ने भी उनको कभी नहीं कहा कि तुम चीफ़ इञ्जीनीयरी छोड़ कर चले जाओ। आगे बढ़ने के लिए आरम्भ क्या है? आरम्भ में कर्म करो तथा कर्म में आपकी आसक्ति न हो, कर्म में प्रेम हो, स्नेह हो जहाँ भी आप काम कर रहे हो। यह अध्यात्म है जहाँ भी आप काम कर रहे हैं, आप अध्यापक हैं, आप इञ्जीनीयर हैं, आप डाक्टर हैं वही काम करिये। होता क्या है? लोग अपने काम में रुचि नहीं रखते। हमारे देश में जो एक बड़ी भारी कमी है, वो यह है कि लोग काम नहीं करते। आप दफ्तरों में जाओ, प्रात: एक क्लर्क आता हैं, एक आध फाईल निकाली तथा भागता है। उसके बाद फिर अपनी गप्पें-शप्पें लगाने लगे फिर Lunch में चले गये। इससे न तो देश की उन्नति हो सकती हैं तथा न ही

उनकी अपनी। उनको बारम्बार
है। गरीबी क्यों है? तुम्हारे पिछ
अच्छे नहीं होते। आगे आकर
होना ही है। तो कर्म करने में क
मिलता है। मालिक जिस हाल में
तथा कर्म को कहते हुए काम में आनन्द लो। जब आप कर्म में आनन्द लेंगे तो आपको मालिक वहाँ नहीं रखेगा वो ऊपर उठाकर आगे भेज देगा। एक तो विश्वास नहीं, दूसरा ज्ञान नहीं, तीसरे इच्छा नहीं कि मैं आगे बढ़ूंगे। कर्म करते हुए चाहे आप घर का ही काम करते हों अपना सुधार करो। पिता जी क्या कहते थे? सबसे पहले यदि आप ईश्वर से प्रेम करना चाहते हैं तो अपने घर वालों से प्यार करो। पति पत्नी को प्यार करे तथा पत्नी पति को प्यार करे, बच्चों को प्यार करे। मालिक को ढूंढ़ते हैं, मालिक कहाँ है? प्रत्येक के अन्दर मालिक है।

एक बार ऋषियों की एक सभा हो रही थी। तो उसमें बैठे हुए प्रश्न हुआ कि सब से ऊँचा परम तत्त्व क्या है विश्व में, ब्रह्माण्ड में सबसे ऊँची वस्तु क्या

ा किसी ने कहा देवता सबसे ऊँचे हैं। देवता का र्य, ब्रह्मा, बिष्णु, महेश तथा शक्तियाँ है। यह नहीं हैं। सन्तमत यह नहीं कह सकता कि देवता नहीं हैं। देवता इस देश,काल के जगत् में काम करते हैं तथा जब आप देवता के विरुद्ध जाते हैं तो आपको कष्ट भी होता है। देवता तो सारे विश्व का संचालन करने वाली शक्तियाँ हैं। उनके अनेक नाम हैं। उनके अनेक रूप हैं। इस उत्तर को किसी ने नहीं माना। फिर किसी ने क़हा कि ईश्वर वो शक्ति है जो देवताओं को वश में करती है अर्थात् उनका संचालन करती है। देश-काल के ऊपर निरीक्षक है, ईश्वर है। हम उस ईश्वर का साक्षात्कार करते हैं। हम यह नहीं कहते कि ईश्वर नहीं है। ईश्वर है, परमेश्वर है। इस उत्तर पर भी जब सब मौन बैठे रहे तो समझा गया कि यह उत्तर तो ग़लत है। आखिर जब किसी ने उत्तर नहीं दिया तो वेदब्यास जी ने अन्त में कहा मैं अपको सबसे रहस्यमय बात बता रहा हूं। मनुष्य से बढ़ कर कोई तत्त्व इस विश्व में नहीं है। लोग क़हते हैं कि वेद-ब्यास पहुंचे नहीं। यह ग़लत बात है। यही बात सन्तमत कहता है तथा यही बात पिता जी ने कहा

कि ऐ मूर्ख मनुष्य ! तू अपने आप में पूर्ण है। इस पूर्णता से ही तुम्हें अनुभव होते हैं। तू शरीर में पूर्ण है। जब तक साँस ले रहा है, जब तक प्राण को शक्ति है, पूर्ण से आ रहा है तो पूर्ण है। तुम अपने विचार में "जैसा ख्याल बैसा हाल।" पूर्ण हो तो विचार को एक जगह टिका दो तो वो विचार प्राप्त हो जायेगा और विचार के बाद तुम अपनी आत्मा। में पूर्ण हो। तो इसमें ओर उसमें क्या भेद ? उन्होंने तो केवल यह कहा कि आप ईश्वर को प्रेम करना चाहते हो। ईश्वर सब के हृदय में है। जैसा कि गीता में अर्जुन को कहा कि ईश्वर सब के हृदय के देवस्थान में बैठा है तथा सब लोग भ्रम अर्थात् चक्कर में आ रहे हैं। वह हृदय के अन्दर है, आप उसको बाहर ढूंढ़ते हो यह भारी भूल है।

एक किस्सा है। एक धनाढ्य व्यक्ति बैंक में गया। उसने बीस-तीस हज़ार रुपया निकलवाया तो एक डाकू उसके पीछे शहर गया। उसने देखा कि यह पैसा निकलवा रहा है तो मैं उसका अपहरण करूँ। तो उसने पता किया कि यह पैसा क्यों

निकाल रहा है। जासूसी की तो उसको पता चला कि यह हरिद्वार तीर्थ यात्रा करने जा रहा है तथा अमुक विन अमुक गाड़ो में उसकी सीट रिज़र्व है। तो वो डाकू गया और उसने उसी डिब्बे में अपनी सीट रिजर्व करवाई और उसी दिन अच्छा सा सूटकेस लेकर उसी गाड़ी में जा बैठा। अब गाड़ी चली, एक दूसरे से वार्तालाप हुआ तो उस डाकू ने सेठ से कहा भई, आप कहां जा रहे हो। उसने कहा मैं यात्रा पर जा रहा हूं। उसने पूछा कि आप कहाँ जा रहे हो ? उसने कहा मैं भी हरिद्वार यात्रा पर जा रहा हूं। अच्छे आदमी हो। बातचीत हुई तो मित्रता हो गई। गाड़ी चलती गई। सेठ जी ने खाना लिया तो उसको भी दिया। इस तरह मित्र बन गये। कहने लगा कि तुम वहाँ चल रहें हो तुम बड़े अच्छे आदमी हो। सेठ ने फिर कहा कि तुम मेरे साथ ही रह लो। एक ही कमरे में रहेंगे। आधा-आधा खर्चा देंगे। डाकू भो यही बात चाहता था। अत: वह बहुत प्रसन्न हुआ। जब वहां जाकर एक ही होटल के अन्दर ठहरे तो दिन को जब जाते तो सेठ जी और डाकू साथ। सेठ जी जब अपना पर्स निकाल कर पैसा देते तो

वह देखता रहता कि वो अपना पर्स दायें या बायें कहां रखता है। रात को जब सो गये तो आधी रात को उठा और सेठ जी के कोट को देखने लगा। दई ओर नहीं था वाई और नहीं था। पैंट देखी, उसने उसका सन्दूक खोला। जब खोलने लगा तो उसको पता लगा कि सेठ जगने वाला है। तो सोचा कि कल करूंगा। दूसरे दिन उसने देखा कि उसकी पौकेट में पर्स है। और जब सारा दिन हो गया। तो रात को फिर उठा तो उसने जल्दी-२ उसकी पौकेट में देखा, तो वहाँ भी नहीं है। अब एक छोटा सा वैग था उसको नहीं देख सका तथा सो गया। तीसरे दिन उसने अच्छी तरह से देखा कि अब देखूं कहां रखता है। आखिरकार देख लिया कि कि पौकेट में कहां रखा। जब आकर सो गये तो अब तो उसने क्या खेल खेला कि चाय मंगवाई तो उस चाय में कुछ नशीली चीज डाल कर सेठ जी को पिला दी और रात को खूब अच्छी तरह पर्स तलाश किया मगर पर्स कहीं नहीं मिला। प्रात: उसने सेठ जी को नमस्कार करके कहा कि महाराज, मुझे क्षमा कीजिए। मैं तो डाकू हूं। मैं आपका रुपया चुराने आया था तथा मैं तीन दिन आपका पर्स तलाश

करता रहा। अब मैं आपकी चोरी नहीं करूंगा। कृपया मुझे यह रहस्य बता दो कि आप पर्स कहां रखते हो ? तो सेठ ने कहा कि पहली बार जब तुम मुझे मिले तो मैं समझ गया था कि तुम अच्छे व्यक्ति नहीं हो, इस लिए मैंने तुम्हें कहा कि मेरे साथ रहो और जब तुम सोने से पहले वाथरुम में जाते थे तो मैंसोने से पहले अपने पर्स को तुम्हारे सरहाने रख देता था। ऐसे ही मालिक तो यहाँ है आप ढूंढ़ रहें हैं बाहर। मुसलमान ज़ोर-2 अल्ला-2 कह कर पुकारता है कि मालिक ऊपर है। ये गिरजा घर वाले कहते हैं कि अन्तर से आ रहा है। न कोई राम बाहर से आता है, न कोई कृष्ण बाहर से आता है, इसी बात को सन्तों ने कहा है कि जब वो मालिक अन्तर में है तो कर्म करो। कर्म करते हुए आप उसमें आसक्त मत होवो। कर्म करते हो तो आप किसी की भलाई करो। जो काम आप किसी की भलाई के लिए करेंगे, तो आप स्वयं उससे न बंधिए। जो कर्म आप स्वार्थ के लिए करेंगे, उससे आप बंध जायेंगे। मन की शुद्धि के लिए यही बात है। पिता जी ने सदैव कहा है कि जो घर के अन्तर शान्ति नहीं रखता वो सौ अजपाजाप करे, कानों में उंगलियां

दे, उसको कोई लाभ नहीं। इस लिए ध्यान सुमिरन, भी सबके लिए नहीं। जब तक कि आप मन में संकल्प नहीं करते कि मैं समाधि में इस लिए बैठ रहा हूं कि हे मालिक! मेरे अन्तर जो किसी के प्रति ईर्ष्या, द्वेष है उसे हटा दे। यदि आप इस प्रकार से बैठेंगे तो आप पर उसका प्रभाव पड़ेगा। तथा आप की भलाई स्वयं ही होगी। यहां आत्मा की उन्नति का सम्बन्ध है। आत्म क्या है? आत्मा प्रकाश है। इस लिए यदि आप ध्यान सुमिरन करें तो प्रकाश पर करें। गुरु तो आपको बार-2 बातें समझा कर, एक समय आयेगा आपको ऐसा झटका देगा, तब आप कहोगे कि अब मैं समझा। सत्संग में बार-2 आना आवश्यक है क्योंकि उससे आपकी आत्मा धुल रही है। यह सत्संग तथा ध्यान, सुमिरन धुलाई के लिए ही हैं।

सन्तों ने दो शब्द कहे हैं, सुरत शब्द योग। शब्द योग जो विश्व भर में है वो हमारे अन्तर है। उसी को अनहद नाद कहा है। मैं अभी एक बात कह रहा था। सेठ जी बैठे थे। प्राय: उनको थोड़ा दु:ख था

कि कुछ सन्तमत वाले ऐसे हैं जो लोगों को गुमराह करते हैं कि मन्दिर में मत जाओ, राम का नाम मत लो। उन्होंने ऐसी बातें कहीं। लेकिन मैंने कहा कि सन्त कबीर सन्तमत के संचालक माने जाते हैं, उनको आदि गुरु कहते हैं। हालाँकि आदि गुरु 1912 पहले बहुत हुए हैं। लेकिन यदि इस युग में मान लो तो कबीर साहिब ने इस पद को कैसे प्राप्त किया ? जिसको उन्होंने गाकर कहा :—

सखिया वो घर सब से न्यारा, जहां पूर्ण पुरुष हमारा।

जब इन्सान उस घर पहुंच जाता है तो दुःख, सुख सब समाप्त हो जाते हैं, यह सच्ची बात है। गीता में भी लिखा है। कबीर साहिब ने वो पद कैसे प्रापत किया ? एक जुलाहे के घर में पैदा होने के नाते रामानन्द जी के पास नाम लेने के लिए गये। रामानन्द जी बड़े अच्छे गुरु थे। लेकिन उनमें एक कमी थी कि उन्होंने कहा कि भाग जा, तुम जुलाहें के लड़के हो। तो कबीर ने कहा कि मैं भी आपसे नाम लेकर छोड़ूंगा। आप ने सुना होगा कि जब रामानन्द गुरु गंगा में स्नान करने जाते थे जिस घाट पर

वो जाते थे उसको मालूम था। वो एक तम्बा वाँध कर वहाँ पर उसी शिला पर जहां से उनको गुजरना था लेट गया । जब वे सीढ़ी से गुजरने के लिए गये, रात का समय था, अन्धेरा था । जब वे गुजरने लगे, उनका पाँव उनके नर्म-2 शरीर पर लगा उनको कोई चीज़ नर्म सी लगी तो रामानन्द जी ने तुरन्त कहा— राम ! राम ! तो कबीर ने उठ कर कहा कि आप ने मुझे नाम दे दिया तथा मैं आपका शिष्य हूं। और राम नाम का जप करते हुए वो उस पद को प्राप्त हुए। वो कबीर जो राधास्वामीयों के, सब गुरुओं के गुरु हैं, उन्होंने राम नाम को प्राप्त किया जिसको राधास्वामी मानते हैं और ऐसा प्राप्त किया कि वो मरे नहीं। जैसा आप को मालूम होगा कि सन्त कबीर मालिक के अन्तर इतने रत हो गये कि एक बार उनके लड़के का किसी ने सिर काट दिया था, उसका सिर जोड़ दिया। क्या नहीं किया ? एक बार बहुत से साधु आ गये । सन्तों की सेवा करते थे। उन्होंने कहा बीस-पच्चीस सन्त आ गये हैं, इनके लिए खाना बनाओ। तो पत्नी कहती है घर में आटा नहीं। अच्छा भई, कुछ करते हैं। पड़ोस

में बनिया था, उसके पास गये, उसको कहा कि मुझे पैसा दो, कुछ सन्त आ गये हैं। बनिया कुछ दुष्ट था उसकी दृष्टि कबीर की सुन्दर पत्नी पर थी। कहने लगा-पैसा तो मैं देता हूं, आज रात अपनी पत्नी को हमारे घर भेज देना। भेज दूंगा, इसमें क्या बात है। जब सन्तों को खिलाया-पिलाया, आधी रात हो गई तो उन्होंने पत्नी को कहा—चल भई, थोड़ा सा काम है। पत्नी साथ चली गई। कबीर ले जाकर सेठ से कहने लगे, लो इसे ले जाओ। वो तो छोड़ कर चले गये। वो ऊपर गई तथा जब वह बनिया अपनी दुष्ट भावना प्रकट करने लगा तो कबीर की पत्नी शोर मचाने लगी। जब वो शोर मचा रही थी तो इतने में किसी ने नीचे से द्वार खटखटाया। अरे सेठ! यह किसकी आवाज़ आ रही है। नीचे क्या देखता है कि कोतवाल सहित पुलिस खड़ी हुई है। काँपता हुआ नीचे आया, अरे! यह आवाज़ तो कबीर की पत्नी की है। हां, महाराज! इसे तुरन्त भेजो। वो कोतवाल कबीर की पत्नी को घर छोड़कर चले गये। दूसरे दिन उनकी पत्नी कहती है कि ऐसी बात हुई, आप जाकर कोतवाल का धन्यवाद तो कर दो।

कबीर साहिब धन्यबाद करने जाते हैं तथा कोतवाल से कहते हैं। कि कल आप ने मेरी पत्नी की रक्षा की। वह बोले, क्या रक्षा की ? मुझे तो कुछ पता ही नहीं कि वह कोतवाल कौन था ? ऐसी-2 घटनाएँ हुई।

उन के लिए हिन्दू, मुसलमान सब बराबर थे। उन्होंने मगहा में शरीर छोड़ा। लोग कहते हैं कि काशी में मरे तो स्वर्ग में जाता है और मगहा में मरे तो नरक मिलता है। तो अन्तिम दिन कबीर साहिब से किसी ने कहा कि मगहा में चल कर के किसो की लड़की की शादी है उसे ठीक करो। सन्त अपने लिए नहीं जीता। पिता जी अमेरिका क्यों गये ? बिलकुल कबीर की तरह सारे संसार के कल्याण के लिए बहाँ जाकर शरीर छोड़ा। कबीर ने मगहा में शरीर त्यागा। लोग कहते हैं कि शरीर बनारस में त्यागणा चाहिए, लेकिन वो कहते हैं 'सबै भूमि गोपाल की।' जब वो मगहा में आये तो आत्मामग्न हो गये। वो मर रहे थे तो उन्होंने कहा, हे मालिक ! हे राम ! अरे

काशी में मर कर के सीधा स्वर्ग को जाते हैं तो मैं मगहा में मर कर स्वर्ग जाऊंगा। कहते हैं कि राम प्रकट हुए, उनके हाथों में कबीर ने प्राण दिये तथा जब मुसलमान कहने लगे इनको दफ़नायेंगे, यह मुसलमान थे, हिन्दू कहते हैं कि हम तो इनको जलायेंगे। आपस में झगड़ा हो गया। तो सरकार की ओर से यह कहा गया कि आप हिन्दू और मुसलमान अपनी-2 फूल मालाएँ लाओ तथा इनके ऊपर रख दो। कल कि देखेंगे किस ओर की मालाएँ ठीक हैं तथा किनकी मुरझा गई हैं तो उनके अनुसार ही संस्कार किया जायेगा। रात भर बैठे रहें प्रात: क्या देखते हैं कि सारा शरीर पुष्य बन गया। कबीर साहिब ने कहा था कि एक सरल मार्ग, कलियुग में भगवान् शंकर ने कहा है कि व्यक्ति नाम से तर सकता है। पहले युगों में बहुत कर्म करने पड़ते थे। उनका एक पद है :—

कबीरा धारा अगम की, सत्तगुरु दई बहाय।
ताहि उलट सुमिरन करे, स्वामी संग मिलाय।

अगम की धारा गुरु से जर्थात् परम तत्त्व से निकली है। प्रकाश को गुरु के चरण कहते हैं,

तो वो जो अगम की धारा मालिक ने बहाई है, हम उस में पहुंच गये । अब यदि वापिस जाना है तो उसको उलट करो तो उसको राधा बनाकर के उलटते जाओ तथा स्वामी शब्द को साथ जोड़ दो तो राधास्वामी का जाप करो, कानों को बन्द करो। अन्तर से आवाज आयेगी। यह सरल गढं है। लेकिन यह सरल ढंग है। इस लिए बताया है कि यदि आप अपनी शुद्धि करना चाहते हैं, यदि आप उसे वास्तव में जानना चाहते हैं तब यह है, नहीं तो आपके लिए यही है कि आप सच्चे बन कर रहो, किसी के साथ हेरा-फेरी न करो, दिल से अपने माता-पिता की सेवा करो,उससे भी आप चले जायेंगे, इस जन्म में नहीं तो अगले में। अगले में नहीं तो अगले में यह कोई आवश्यक नहीं कि केवल योगियों ने ही जाने का ठेका लिया हुआ है। योगी का तो यत्न होता है। कई बार गिर जाते हैं। आप यदि धीरे-२ चलेंगे तो पहुंच ही जायेंगे। अध्यात्म का अर्थ यह है कि आत्मा, शरीर और मन का सम्बन्ध रहता है। आप केवल कर्मयोग से भी जा सकते हैं। लेकिन जब आप

कर्मयोग से धीरे-2 जायेंगे आप ऐसी अवस्था पर पहुंचेंगे कि बाद में आप स्वयं ही तृप्त हो कर देख लेगें कि संसार से ऊपर वाली जो वस्तु है वो भी सच्ची है। इस लिए आप अध्यात्म में शरीर की शुद्धि तथा मन की शुद्धि करके जा सकते हैं तथा आत्मा को देखने के लिए सुरत शब्द योग से अन्तर में उसी तत्त्व को अनुभव करते हुए भी जा सकते हैं, तथा प्रत्येक के लिए एक सी बात नहीं है। तथा जब कोई मेरे पास आता है, पिता जी की आज्ञा है तो उसके अनुसार उसको रास्ता बता दिया जाता है। यह अध्यात्म की बात है। सुरत शब्द योग सरल अवश्य है, लेकिन उसके लिए पहले अपने शरीर को तथा फिर मन को शुद्ध करना है, फिर आत्मा प्रकाश में जाती है।

मैं यहाँ आया, इच्छा तो थी कि अधिक दिन रहता, लेकिन अभी मैं कुछ बेबस हूं। मुझे पिता जी की आज्ञा है कि मैं यह काम करूं। मेरा तो बचपन से ही यही काम था। मालिक की इससे अच्छी और क्या कृपा हो सकती है

[शेष क्रमशः]

मनमोहन गुप्त बिलारी का पत्र परम सन्त मानव दयाल जी को

परम पूज्य परम तत्त्व आधार मालिक कुल के अवतार मानव दयाल जी महाराज के चरणों मे, कर जोड़ कर व मत्था टेक कर राधास्वामी ।

जैसा कि पिताजी ने आपको मानव दयाल की उपाधि प्रदान की है, वह सर्वथा रूप और गुण के अनुरूप है । इसका विश्वास मुझे तब हुआ जब मैं दर्शनों की अभिलाषा से 3 जनवरी 1982 को दिल्ली आया था । मुझे वही शान्ति और आनन्द मिला जो परम दयाल जी महाराज के दर्शनों से मिलता रहा था । और उस समय तो मेरे आनन्द की कोई सीमा न रही जब आपने आज्ञा दी कि 2, 3 वजे R 850 न्यू राजेन्द्र नगर में मिलना । बात यह थी कि मैं आप से अकेले में मिलना चाहता था । 2 जनवरी 1982 की रात को 9 वजकर 30 मिनट पर आपका रूप मुझे प्रकट हुआ था और दिल्ली आने की आज्ञा दी थी । चूंकि इससे पहले मैंने आपको कभी नहीं देखा

था अत: मुझे आश्चर्य यह था कि आपका रूप कैसे प्रकट हो गया। इसी उत्सुकता के कारण मैं आपसे अकेले में मिलना चाहता था परन्तु संकोच के कारण कह नहीं पा रहा था। परन्तु वाह रे दयालु महाराज, आपने मेरे मन का भाव परख लिया और बिना मांगे वरदान दिया कि 2, 3 बजे निवास स्थान R 850 न्यू राजेन्द्र नगर में मिलना। कुछ बात करूगा।

जब आपसे एकान्त में बातें हुई तो मैंने अपने मन का आश्चर्य आप से ज़ाहिर किया और भेद जानना चाहा तो आपने फरमाया कि मैं तुमसे मिलना चाहता था इस लिए अपनी रेडीयेशन के ज़रिये तुम्हें बुलाया था। मेरा अनुभव यह है कि इतनी शक्तिशाली रेडीयेशन उसी की हो सकती है जो तीन लोक को छोड कर चौथे पर का वासी हो। इस घटना से मुझे यह विश्वास हो चला है कि अब मेरा इसी जन्म में कल्याण हो जायेगा और आवागमन के चक्र से हमेशा के लिये मुक्त हो जाऊँगा। पूज्य पिता श्री परम दयाल जी महाराज ने मेरी बहुत सम्भाल की है। आपसे भी मेरा यही

निवेदन है कि मैं तो अज्ञानी जीव हूं। अपना भला-बुरा कुछ नहीं जानता। जैसे छोटा बच्चा होता है मां क्या कहती है इसको नहीं समझता। मां के शरीर से ही चिपटना जानता है। अतः मैं उसी तरह अज्ञानी हूं। मेरा परमार्थ, मेरा संसार सब आपको ही बनाना है।

"मेरा मुझ को कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागेगा मोर॥"

अधिक क्या लिखूं आप तो अन्तर्यामी हैं। बस यही निवेदन है कि मेरे अवगुणों को जानकर घृणा न करें बल्कि ऐसा रास्ता बताते रहें जिससे अवगुण दूर होते रहें। दिल के भाव कुछ इस तरह निकल रहे हैं: —

मालिक मुझे चरणों में जगह क्यों नहीं देते ?
औरों की तरह मुझको चेता क्यों नहीं देते ?
फीके हों दुनिया के मज़े जिसके सामने,
ऐसी किसी मंज़िल का पता क्यों नहीं देते ?
माना कि न छोड़ूंगा कभी आपका दामन,
सीने से मगर मुझको लगा क्यों नहीं लेते ?

सच्चा हूं तो फिर साथ न देने का सबब क्या ?
पापी हूं तो दुनिया से उठा क्यों नहीं लेते ?
रूहानियत की राह पर चलता रहे "मोहन"
ऐसी कोई जीने की दुआ क्यों नहीं देते ?

सब सत्संगी भाई-बहनों को राधास्वामी ! आशा है अपने अमूल्य समय में से दो शब्द इस सेवक को भी लिखने का कष्ट करेंगे ।

विशेष प्रार्थना :—सभी सत्संगी भाई-बहन आप के दर्शनों के अत्यधिक इच्छुक हैं अत: अपने कार्य-क्रम में बिलारी को तीन चार दिन का समय अवश्य दें ।

(मनमोहन गुप्त, बिलारी)

3643 west 39 th Street
Cleveland, Ohio. 44109
U. S. A.
January 20, 1982

मेरे परम प्रिय मनमोहन गुप्त,

राधास्वामी! परम दयाल जी सहाई!

आपका प्रेम भरा 8 जनवरी 1982 का पत्र परसों मिला। आपकी श्रद्धा तथा विश्वास के कारण ही परम दयाल जी की कृपा से रेडीएशन के नियम के अनुसार आपको ये अनुभव हुए हैं। मैंने आपको 3 जनवरी से पहले कभी नहीं देखा था। जब बिलारी के सत्संगी मुझे 27 दिसम्बर को होशियारपुर में मिले तो मेरी यह इच्छा ज़रूर हुई थी कि बिलारी के केन्द्र में सत्संग कराने वाले किसी व्यक्ति से मेरी मुलाक़ात ज़रूर होनी चाहिए। शायद मेरी इसी इच्छा के कारण ही आपसे मेरी भेंट हुई और मैंने आपको अकेले में मिलने के लिए कहा। आपने जब

मुझे बताया कि पिता जी ने आपको सत्संग कराने की आज्ञा दी हुई थी तो मुझे सन्तोष हो गया।

मुझे पूरा विश्वास है कि जिस श्रद्धा और विश्वास से आप चल रहे हैं, आप ज़रूर मंज़िले मकसूद तक पहुंच जायेंगे। सच्चाई से अपने निजी अनुभवों के आधार पर काम करते जाओ। मैं हमेशा आपका मार्ग दर्शन करता रहूंगा। मालिक आपको कासयाबी दे यह मेरा दिल से आशीर्वाद है। बिलारी के प्रोग्राम के लिए आप मानवता मन्दिर में डाक्टर जौड़ा को लिख दीजिए। मैं एक या दो दिन बिलारी में रह सकूंगा। आप हर समय मुझे पत्र लिख सकते हैं। राधास्वामी!

आपका मानव

धन्यवाद !

मैं श्री पं० दिवान चन्द शर्मा Chief Editor
पन्द्रह रोजा, सनातन धर्म प्रचारक,
कटरा जैमल सिंह, अमृतसर।
और
श्री बख्शी अमर नाथ (ESSAR)
Editor माह नामा ब्राह्मण गजट
11, सिविल लाइन मेरठ (यू.पी.)

का हार्दिक धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने हजुर महाराज परम सन्त परम दयाल पं० फ़कीरचन्द जी मालिके कुल के उच्च बिचार अपने पत्रों में देकर जनता को लाभ पहुँचया है।

श्री ज्ञान चन्द रामपाल, निवासी अशोक नगर, होशियारपुर का भी मैं बहुत धन्यवादी हूं क्योंकि उन्होंने ये लेख छपवाने के लिए हमारी सब की सहायता की है।

आशा है ये सज्जन इसी तरह से आगे भी ऐसे शुभ काम में सहायता देते रहेंगे।

डा. के. एल. जौड़ा

मेरे प्यारे सत्संगियो !

राधास्वामी, परम दयाल सहाई !

मैं अपने परम गुरु परम सन्त परम दयाल पण्डित फ़कीरचन्द जी महाराज के हुक्म के मुताबिक़ 1981 के समाप्त होने से पहले ही आप लोगों की सेवा में 8 दिसम्बर को ही अपने देश में आ गया। बम्बई, आगरा, बनारस, देहली तथा भीलवाड़ा में मैंने सत्संग भी दिये और 24 दिसम्बर को मानवता मन्दिर में पहुंच कर अपनी उस ज़िम्मेवारी को सम्भाला, जो मुझे परम दयाल जी ने अपनी वसीयत में सौंपी थी।

सब जगह पहली ही भेंट में आप सब सत्संगियों का प्रेम उमड़ता हुआ देख कर मैं निहाल हो गया। आपके प्रेम, आपकी श्रद्धा और आपके विश्वास ने मेरे इस ख्याल को पक्का कर दिया कि आप सब ही मेरे परम गुरु के सच्चे ज्ञान को उभारने वाले हैं

और आपके द्वारा ही मेरे जीवन का परम उद्देश्य पूरा होगा।

आप में से कुछ लोगों ने मुझे आ कर यह कहा कि आपने मेरे में परम दयाल जी महाराज का रूप देखा है। मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि मैंने आप में न ही केवल पिता जी का रूप ही देखा है, बल्कि उनकी अपार दया और उस सच्चे प्यार की वह झलक भी देखी है, जो मेरे रोम-२ में बस रही है। सच्च कहता हूं ऐसा अनोखा प्यार जो मैंने परम दयाल जी से पाया है, उसके आगे दुनिया की हर चीज़, मान, मर्यादा, धन तथा नाम सभी फ़ीके पड़ जाते हैं। माता पिता का इकलौता बेटा होने के कारण मैंने बचपन से ही उनका बहुत प्यार पाया था, परन्तु परम दयाल जी महाराज के प्यार के सामने वह प्यार भी बहुत तुच्छ दीखता है। मेरे परम दयालु गुरुदेव की मेरे ऊपर बड़ी भारी कृपा रही है। मैं इस समय जो भी हूं परम पिता जी की कृपा से हूं। मुझे इस बात में ज़रा भी शक नहीं रहा कि बड़े-बड़े दाना और पण्डित, जो अपनी पण्डिताई को बयान करते रहते हैं, किताबी ज्ञान के कारण

लोगों को बड़े-बड़े भाषण दे सकते हैं, परन्तु अन्दर [illegible] अनुभव न होने के कारण लोगों पर अपना असर [illegible] के रहस्य को [illegible] है :—

'भटकते फिरते हैं लाखों पण्डित हज़ारों दाना करोड़ों स्थाने,
लेकिन देखा तो यार आखिर खुदा की बातें खुदा ही जाने ।

मैंने जो सत्संग दिये हैं, वे सब परम पूज्य पिता जी की कृपा से अपने निजी अनुभव के आधार पर [illegible] दिये हैं । जो अनुभव मैंने पिता जी के आपरेशन होने से पहले, उनकी सेवा करते हुए एक रात को किया उसका बयान करने के लिए मुझे कई पुस्तकें लिखनी पड़ेंगी और कई सत्संग देने पड़ेंगे । उस एक ही रात में मेरे दयालु मालिक ने मुझे जो ज्ञान दिया वह आज तक शायद किसी गुरु ने अपने शिष्य को नहीं दिया होगा । उसी रात को ही परम दयाल जी ने मुझे अपने बिस्तर के पास बुलाया । मेरे माथे से अपना माथा लगा कर बोले, "मेरे मानव दयाल ! खुश रहो ! मालिक तुम्हें लम्बी आयु दें । बच्चे मेरे ! तेरा उद्धार इसी जन्म में हो जायेगा, तब तू और मैं का झगड़ा मिट जायेगा । तू भी मेरी तरह

एक दिन मालिक में मिल जायेगा। लेकिन उस परम तत्त्व में मिलने से पहले तुम्हें इस दुनिया में महान् काम करना है। सच्चाई से काम करते जाना। मैंने देख लिया है तुम्हें धन, मान, नाम, मर्यादा किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। काम करते जाओ। रास्ते में रुकावटें आयेंगी, परन्तु हिम्मत नहीं हारना। दाता दयाल सदा तुम्हारी रक्षा करेंगे। जल्दी ही दुनिया में बहुत बड़ी तबाही आने वाली है। भारत में भी तबाही आयेगी। इस तबाही में दुनिया के आधे लोग समाप्त हो जायेंगे। इस तबाही के बाद ही लोगों को होश आयेगा, फिर वे हमारे, आप सब के तथा दाता दयाल जी के मानवता धर्म को अपनायेंगे परन्तु यह तबाही ज़रुर आयेगी इसको रोका नहीं जा सकता, क्योंकि अधिकतर लोग खुद गर्ज़, लालची, फ़रेबी, ईर्ष्यालु तथा लोगों की पीठ पीछे निन्दा करने वाले हो गये हैं।"

जब पिता जी ने अपने माथे को मेरे माथे से छुआ तो मेरे अन्दर एक ज़बर्दस्त प्रकाश हुआ। उस रात के बाद मैं बहुत बदल गया। वैसे तो बचपन से ही मेरी मस्तो में रहने को आदत थी,

परन्तु उस रात से तो मस्ती ही मस्ती है और मैं ज्यादा से ज्यादा समय मानो समाधि की हालत में रहता हूं। मेरे रोम-२ में परम दयाल जी समा गये हैं। मेरे दुनियानी काम भी अपन आप होते जा रहे हैं। उस रात के दूसरे दिन ही मेरे बड़े लड़के डाक्टर अरुण को पिता जी की दया से ऐसी नौकरी मिली, जिसकी हमें आशा भी नहीं थी। इस छोटी सी आयु में पिता जी की कृपा से प्रिय अरुण को इतना पैसा मिल रहा है, जो मुझे इस आयु में भी नहीं मिला। मेरा छोटा लड़का प्रियदर्शी भी अगले साल पी. एच. डी. करने के बाद प्रोफेसर (सहायक) हो जायेगा। देखा आपने कैसे पिता जी की कृपा से मेरे घर के मामले कितनी आसानी से सुलझ गये और मैं पिता जी के मानवता धर्म को फैलाने के लिए आज़ाद हो गया। दोनों बेटे अमेरिका में रहेंगे लेकिन मैं अपनी पत्नी के साथ भारत आ गया हूं, होशियारपुर मेरा हैडक्वार्टर है। कुछ समय अमेरिका हर साल आता रहूंगा दौरे पर जैसे कि पिता जी आते थे। परन्तु इससे मानवता मन्दिर के कामों में कोई रुकावट नहीं आयेगी। यह मेरा आपसे वादा है।

आपसे मेरा दूसरा वादा यह है कि मैं सदा

आपको अपने सच्चे अनुभव ही बताता रहूंगा और आपके विश्वास को कभी नहीं तोड़ूंगा। पिता जी ने मुझे जो ज़िम्मेवारी सौंपी है, उसे अगर प्राण भी देने पड़े तो भी निभाऊंगा। इस बार के दौरे में समय कम होने के कारण मैं आप से नहीं मिल सका, उसका मुझे अफ़सोस है। बहुत से लोगों के मुझे यहां पत्र आ रहे हैं कि मैंने उनके शहरों व गाँवों का दौरा नहीं किया। कुछ दिन हुए डाक्टर राजा रामसिंह, चेयरमैन राधास्वामी धाम जनरल सत्संग ट्रस्ट का पत्र आया, जिसमें उन्होंने लिखा कि परम दयाल जी महाराज इतने बुढ़ापे में भी साल में कम से कम दो बार धाम में जाया करते थे। राजा रामसिंह जी ने मुझे धाम में लाने के लिए बनारस में आदमी भी भेजा था, परन्तु समय की कमी के कारण मैं वहां जा नहीं सका। अब मैं डाक्टर राजा रामसिंह जी से वादा कर रहा हूं कि मैं अप्रैल के दौरे में राधास्वामी धाम ज़रूर जाऊंगा। धाम को मैं कैसे भूल सकता हूं, वहाँ तो मेरे मालिक के मालिक दाता दयाल जी, जो युग पुरुष और अवतार थे और हैं का स्थान है। प्यारे सत्संगियो, मैं आज आपको यह भी बताना चाहता हूं कि पिता जी मुझे

कई नामों से बुलाते थे आई०सी० दयाल,दयाल शर्मा, ईश्वर दयाल और मानव दयाल। लेकिन जब कभी उन्हें मेरे ऊपर बहुत प्यार उमड़ आता था तो वह बड़े प्यार से और कभी-२ आंसू बहा कर कहते थे, 'तू तो मेरा दाता दयाल है, मानव !' पिता जी के लिए दाता दयाल जी साक्षात् भगवान् थे। ऐसे परम सन्त दाता दयाल जी महाराज को मेरा कोटि-२ नमस्कार। पिता जी हजूर सावन सिंह जी महाराज का भी बहुत सम्मान करते थे और दाता दयाल जी के चोला छोड़ने के बाद उनकी सलाह भी लिया करते थे।

हाँ तो मैं कह रहा था कि इस दौरे पर समय कम होने के कारण मैं आप सब की मांग को पूरा नहीं कर सका। मेरा अगला दौरा 7 अप्रैल 1982 से जून 1982 तक चलेगा। 11 अप्रैल 1982 को मैं होशियारपुर पहुंच जाऊंगा। आप लोग यदि मुझे अपने शहर या गांव में बुलाना चाहते हैं, तो आप डाक्टर कुन्दन लाल जौड़ा, जनरल सैक्रेटरी मानवता मन्दिर सुतेहरी रोड, होशियारपुर (पंजाब) से पत्र व्यवहार कर लें। डा० जौड़ा मेरे दौरे का

प्रोग्राम बना रहें हैं, आपके शहर व गाँव को उस प्रोग्राम में शामिल कर लेंगे। लेकिन आपको यह ख़त लिखने का काम फ़रबरी के आख़िरी हफ़्ते तक कर लेना होगा ताकि मार्च के मानवता मन्दिर में आपके प्रोग्राम के बारे में छप जाये। आप में से यदि कोई मुझे ख़त लिखता चाहें तो आप मेरे हैडक्वार्टर मानवता मन्दिर सुतेहरी रोड, होशियारपुर (पंजाब) के पते पर लिख सकते हैं। ढाक्टर जौड़ा बहुत मेहनती हैं तथा ज़िम्मेवारी सत्संगी हैं। उन्होंने मेरी डाक को मैं जहां भी हूं वहां भेजने की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर ले ली है। अत: आप बेधड़क हो कर मुझ से पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

बम्बई, बनारस, भीलवाड़ा, देहली तथा होशियारपुर में मैंने जो सत्संग दिये वे धीरे-2 मानवता मन्दिर में छप जायेंगे। मैं हर साल, जहां-2 पिता जी सत्संग देने जाते थे जाया करूगा। मेरी ग़ैरहाजरो में होशियारपुर में सत्संग आदरणीय मुंशीराम जी भगत कराते रहेंगे, जैसा कि वह परम दयाल जी की ग़ैरहाज़री में कराते थे। श्री भगत जी ने इस ज़िम्मेवारी को निभाने का वादा किया है।

पिता जी ने होशियारपुर में मानवता मन्दिर को अपने खून पसीने से सींचा है। इसकी एक-2 ईंट और ईंट का ज़र्रा-2 मेरे लिए और हर एक सत्संगी के लिए पाक है। इस आश्रम की धरती धन्य हो गई जिस पर मेरे मालिके कुल के अवतार के पांव पड़े। पिता जी के इस पाक केन्द्र को हमेशा के लिए सारी दुनिया के लिए सभी धर्मों से सबसे ऊँचे धर्म मानवता धर्म का केन्द्र बनाए रखना हम सब सत्संगियों का फ़र्ज है। इस फ़र्ज को निभाने के लिए मैंने पिता जी के तीन असूलों पर चलने को कसम खाई है। मैं सत्संगियों, आचार्यों तथा ट्रस्ट्रियों से भी यही उम्मीद करता हूं कि वे हमेशा इन पाक अमूलों पर चलेंगे। ये तीन असूल हैं 1) सच्चाई, 2) इन्साफ़ और 3) प्यार। मानवता मन्दिर में सदा इन तीन असूलों पर चलने की सब को हिदायत दी जायेगी। मानवता मन्दिर में और मानव धर्म के प्रचार के लिए किसी गुटबन्दी की ज़रूरत नहीं है। इस मन्दिर में दो सरकल नहीं चलेंगे। मेरा कहने का मतलव है कि अन्दर का सरकल और बाहर का सरकल। दूसरा, यह नहीं चलेगा जैसा कि बहुत से दूसरे डेरों में हो रहा है। हमारा धर्म सच्चाई का धर्व है, इसलिए हमारी कथनी और

करनी में अन्तर नहीं होता चाहिए। आदमी आते और जाते रहेंगे, लेकिन मानवता मन्दिर सदा के लिए बना रहेगा।

इस मन्दिर की बुनियाद परम तत्त्व और सच्चाई के अवतार मेरे और आपके गुरु परम सन्त, परम दयाल जगत् गुरु पण्डित फ़कीरचन्द जी महाराज जी ने डाली है, किसी मामूली आदमी ने नहीं। आप सब ने तथा मैंने उन्हें मालिके कुल का अवतार मान कर हमेशा लाभ उठाया है। यदि आप लोगों का उस मालिके कुल के अवतार में पक्का यक़ीन है तो बेधड़क हो कर आप मेरा साथ दे कर इस जीवन में तथा परमार्थ के जीवन में लाभ उठाते रहेंगे। मेरे प्यारे सत्संगियो! पिता जी कहीं गये नहीं, वह सदा हमारे साथ, हैं। वह हमारे रोम-2 में बस गये हैं। आप उन्हें सच्चे दिल से याद करके तो देखो, वह सदा आपकी मनोकामनाएं पूरी करते रहेंगे।

यदि आप में से किसी सत्संगी, आचार्य या ट्रस्टी को मेरे से, भगत जी से, डाक्टर जौड़ा से या मानवता मन्दिर के किसी और अधिकारी से काई शिकायत हो, तो वह मुझसे सीधा सम्पर्क कर सकते हैं। मैं आप सब से यही प्रार्थना करता हू कि किसी व्यक्ति की उसकी पीठ के पीछे निन्दा करना

मानवता मन्दिर के असूलों के ख़िलाफ़ है। दूसरों की निन्दा करने वालों की कभी आध्यात्मिक तरक्की नहीं होती, चाहे वह चौबीसों घण्टे ही सिमरन, ध्यान क्यों न करें। अत: मेरे प्यारे सत्संगियो ! आज से पर निन्दा को हमेशा के लिए छोड़ दो। इससे आपका मन शुद्ध हो जायेगा और मन शुद्ध हो जाने से परम तत्त्व का प्रकाश आपके मन में अपने आप ही आ जायेगा। मन शुद्ध होने से आपको शान्ति भी मिलेगी और सुख भी मिलेगा।

मैं अपनी ज़िम्मेवारी को पिता जी की वसीयत और उनकी दी गई हिदायतों के मुताबिक पूरी तरह से निभाने की कोशिश कर रहा हूं। मैं यह काम किसी शोहरत पाने या किसी पर एहसान करने के लिए नहीं कर रहा, बल्कि अपने मालिक, अपने गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए और अपने जीवन की मंज़िले मकसूद पर पहुँचने के लिए कर रहा हूं। आपको सच्चा ज्ञान देना मेरा फ़र्ज है, मैं आप पर कोई एहसान नहीं कर रहा।

मैं हर महीने आपको इसी प्रकार सन्देश भेंजता रहूंगा। सब को राधास्वामी।

आपका मानव

———

सूचनाएं

1. हज़ूर परम सन्त परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज बसन्त के अवसर पर प्रत्येक वर्ष अनेक स्थानों का दौरा करके अपने निजी अनुभव पर सत्संग दिया करते थे। हज़ूर के चोला छोड़ने के बाद अब परम सन्त मानव दयाल जी महाराज, जिनको हज़ूर परम दयाल जी महाराज ने अपने स्थान पर नियुक्त किया है, इन सब स्थानों पर अपना सत्संग बसन्त के अतिरिक्त बैसाखी के वार्षिक सत्संग के बाद प्रारम्भ करेंगे। जिन-जिन सज्जनों को यह सत्संग कराने की अभिलाषा हो, वो निम्नलिखित को 25 फरवरी से पहले-पहले सूचित कर दें, ताकि प्रोग्राम बनाया जा सके। वो प्रोग्राम 10 मार्च को छपने वाले 'मानव मन्दिर' में दिया जायेगा और अभिलाषित सज्जनों को भी पत्र द्वारा सूचित किया जायेगा।

2. हज़ूर मानव दयाल शर्मा जी महाराज 11 अप्रैल रविवार शाम को 5 से 6 बजे तक सत्संग देंगे।

डा: के. एल. जौड़ा
(जनरल सैक्रेटरी)
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

3. सब सज्जनों को इस सूचना द्वारा सूचित किया जाता है कि जिन सज्जनों के पते हमारे पास मौजूद हैं उनको निरन्तर मानव मन्दिर भेजा जा रहा है, फिर भी प्रतिदिन कई ऐसे पत्र आ रहे हैं जिनमें लिखा होता है कि हमें मानव मन्दिर नहीं पहुंचता। इसके लिए आप अपने डाकघर से पूरा पता करें कि ऐसा क्यों हो रहा है।

4. फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट ने 17 जनवरी की मीटिंग में निम्नलिखित निर्णय किये हैं। उनकी सूचना सब सत्संगियों को दी जाती है :—

(i) भविष्य में हज़ूर परम दयाल जी महाराज की सब फोटो मन्दिर की ओर से तैयार करवाई जाया करेंगी प्रत्येक फोटो के पीछे उसकी विक्री कीमत तथा जनरल सैक्रेटरी की मोहर होगी। फोटो खरीदने से पहले यह दोनों चीज़ें देख लेनी चाहिएं तथा केवल लिखित कीमत ही देनी होगी। कोई फोटो जिस पर मोहर तथा कीमत लिखी हुई न होगी वो मन्दिर की ओर से नहीं होगी तथा न ही मन्दिर/ट्रस्ट उसका जिम्मेवार होगा।

(ii) जो सत्संगी भाई या बहनें रहने के लिए मन्दिर में कमरा लिया करेंगे, उनको कमरे की चाबी लेते समय 5/- सक्योरटी के जमा कराने होंगे। यह रकम चाबी वापिस देने पर वापिस मिल जाया करेगी।

(iii) भविष्य में लायब्रेरी से किताबें लेने के लिए लायब्रेरी का सदस्य बनना पड़ेगा। उसके लिए लायब्रेरी कार्ड मिल जायेगा तथा 10 रुपए सक्योरटी जमा करानी होगी। दो से अधिक किताबें नहीं दी जाएगी पन्द्रह दिन

के अन्दर-अन्दर लायब्रेरी को वापिस करनी होंगी। उस से ज्यादा देर रखने पर 10 पैसे प्रति किताब प्रतिदिन जुर्माना होगा और नई किताबें पहली किताबें वापिस करने के बाद ही मिला करेंगी। रेयर पुस्तकें कार्ड पर नहीं दी जाएंगी। वहीं पर लेकर पढ़ी जा सकती हैं। सेक्योरटी की रकम सदस्य के हट जाने पर वापिस मिल जायेगी।

आशा है सब सज्जन इस में सहयोग देंगे।

डा: के. एल. जोड़ा

5. मानवता मन्दिर होशियारपुर, हजूर परम दयाल जी महाराज का जीवन चरित्र लिखने का प्रबन्ध कर रहा है। इसके लिए जो सज्जन अपना योगदान देना चाहें अर्थात् उनके जीवन चरित्र की घटनाएं या कोई पत्र व्यवहार भेजना चाहें, तो उनकी बहुत कृपा होगी। जीवन चरित्र बारे अपने विचार जनरल सैक्रेटरी फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट को भेज दें।

सैक्रेटरी मानवता मन्दिर, होशियारपुर
डा: के. एल. जोड़ा

शोक-समाचार

यह दुःखद घटना है कि श्री प्रीतम सिंह जी जो हजूर परम दयाल जी के पुराने सेवकों में थे का देहान्त दिनाँक 3-1-82 को उनके अपने निवास स्थान शास्त्री नगर, देहली में हो गया है। हम सच्चे दिल से चाहते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले और उनके परिवार को उनकी जुदाई सहन करने के लिए शक्ति मिले।

सैक्रेटरी :
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

बाबा फ़कीर

1 धार कर नर रूप जग में आ गया बाबा फ़कीर।
बन मनुष्य इन्सान बन फरमा गया बाबा फ़कीर।
2 आदमीयत का सबक सिखला गया बाबा फ़कीर।
परचमे इन्सानियत लहरा गया बाबा फ़कीर।
3 राह से गुमराह था भटका हुआ सारा जहां।
राहे हक संसार को दिखला गया बाबा फ़कीर।
4 नफरतों की आग से जलते हुए संसार पर।
मींह मुहब्बत प्यार का बरसा गया बाबा फ़कीर।
5 रहमते बारी हुई जीवों की हालत गैर पर।
अरश से फर्शे ज़मीं पर आ गया बाबा फ़कीर।
6 सदक दिल से थी जिन्हें हक़ की तालाश।
राज़ राहे हक़ उन्हें बतला गया बाबा फ़कीर।
7 आमदो रफतन के चक्कर से निकलने के लिए।
रास्ता इन्सान को बतला गमा बाबा फ़कीर।
8 काम कर दरवेश दिन में रात भर आराम कर।
राम भज शामो सहर समझा गया बाबा फ़कीर।

[दरवेश जालन्धरी]

॥ राधास्वामी ॥

परम सन्त परम दयाल श्री हजूर पं: फकीर जी
महाराज के निज स्वरूप में समाने पर
श्री योगराज शर्मा, चण्डीगढ़ की ओर से

श्रद्धाञ्जलि

1 ऐ रहमते ज़मांन ऐ रहमते करम शाहे फकीर,
घूमतो है दुनिया गिर्द तेरे हो कर असीर ।
2 अर्श छोडा अठारह को जानवे फ़र्श आ गये,
छ: जरव तीन $6 \times 3 = 18$ के फह को समझा गये,
3 आदमी को इन्सान वनने का गुर सिखला दिया,
सारे जहां में परचम इनसानीयत का लहरा दिया।
4 काम अपना करके पुरा सब को कर दिया निहाल
फ़ंस को कह अलविदा अर्श में पया बिसाल ।
5 कैसी अकीदत दूं मैं मालिक तू अकीदत से परे,
न तू जाहिर न तू वातिन तू तो इन सब से परे ।
6 तू नूर था तू नूर है तू नूर ही रहेगा,
हर वशर तेरी तालीम का मशकूर ही रहेगा ।
7 तू सब का था तू किसी का नाहिं था ऐ मेरे शाहे फ़कीर
तू काएनात के ज़र्रे ज़र्रे का था एक वाहिद पीर ।
8 हर वशर के दुःख का होता गुमान तुझ को,
हर एक को सुखी रखने का रहता था अरमान तुझ को

9 तेरी तरह का न आज तक अज़ल से कोई फकोर आया
तेरी तरह का न आज तक कोई कलामे शमशीर लाया

10 चलाया चाक ऐसा कि किया चाक सब को
हटाया सब तरफ से और दिखाया राहे नाक सबको

11 तेरी शान क्या थी शान को शान का अनदाज़ा न रहा
शान इतनो हुई कि शान को शान होवे का तवाजा न रहा

12 तू सच था मुज्ज़सम सच समाई से पुरनूर था तू
मिला बहुत नजदीक से सवको मगर बहुत दूर था तू

13 योमे हयात में न कर सके न की कदर तेरी
जाने के वाद दिलो दियाग में रहती है तसवीर तेरी

14 शमा सच की जो जकाई है जलती रहेगी,
तेरी हार पर अब कुल दुनिया चलतो रहेगी।

15 रास्ता असलो घर का सब कर दिया साफ तू ने,
गुमरही दुर करके कर दिया इनसाफ तू ने।

16 तू आया था जहा में सब को आज़ाद कर गया,
किया काम अपना खत्म और परवाज़ कर गया।

17 जज़वा है इक यादहानी इसे पूरा करता हूं मैं
अपनी ही दिल रखने को फूल अकीदत के पेश करता हूं मैं

आधम योगराज

मानव कल्याण सभा, चण्डीगढ़

वन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥
रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय॥
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
14-2-82 को होगा।

Regd. No. 2626574 FEBRUARY 10th 1982
MANAV MANDIR NWHSP—7

26.2.82

ADDRESS

To

1283 - Sh. A[illegible]
H. No. [illegible]
Humayun Nagar
Hyderabad-500028 A.P.

Hyderabad

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

नहीं है तो बाबा सावन सिंह जी महाराज ने डण्डे मारे कि क्या मेरे पास कोई बच्चा पड़ा है ? यह मुझे कहती है कि सन्तों के पास मत जाया करो। इन सन्तों के पास कुछ नहीं। यह सुन कर मुझे बड़ी ग्लानि हुई। मैंने कहा, मेरे पास सुबह आना। वे मेरे पास आये। मैंने आम उठाया, मस्तक से लगाया और अपने ख्याल से मैंने उस आम में प्रकाश का बच्चा बनाया और भरा तथा उसे दे कर कहा कि इसे ले जाओ। उसके हां सात महीने पश्चात् लड़का पैदा हुआ। फिर वह मेरे पास आया। मैंने कहा कोई बात नहीं, दलिया ले आओ। मैंने दलिये का प्रसाद कर दिया और कहा- ले जाओ। उस लड़के का नाम मैंने शिवदयाल सिंह अर्थात् स्वामी जी के नाम के ऊपर रखा। अब वह लड़का ज़वान है। यह मैं अपना अनुभव बता रहा हूं तथा प्रमाण दे रहा हूं कि मैं जो कुछ कह रहा हूं क्यों कह रहा हूं ? यह इस लिए कि प्रकाश का साधन मैंने परखा हुआ है। मैं पुस्तकों का ज्ञान नहीं जानता।

बाबा जगत् सिंह मेरा बहुत मान करते थे। कारखाने में मुझे आकर मिलते थे। आटे से मेरे हाथ